सितम्बर 2009 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

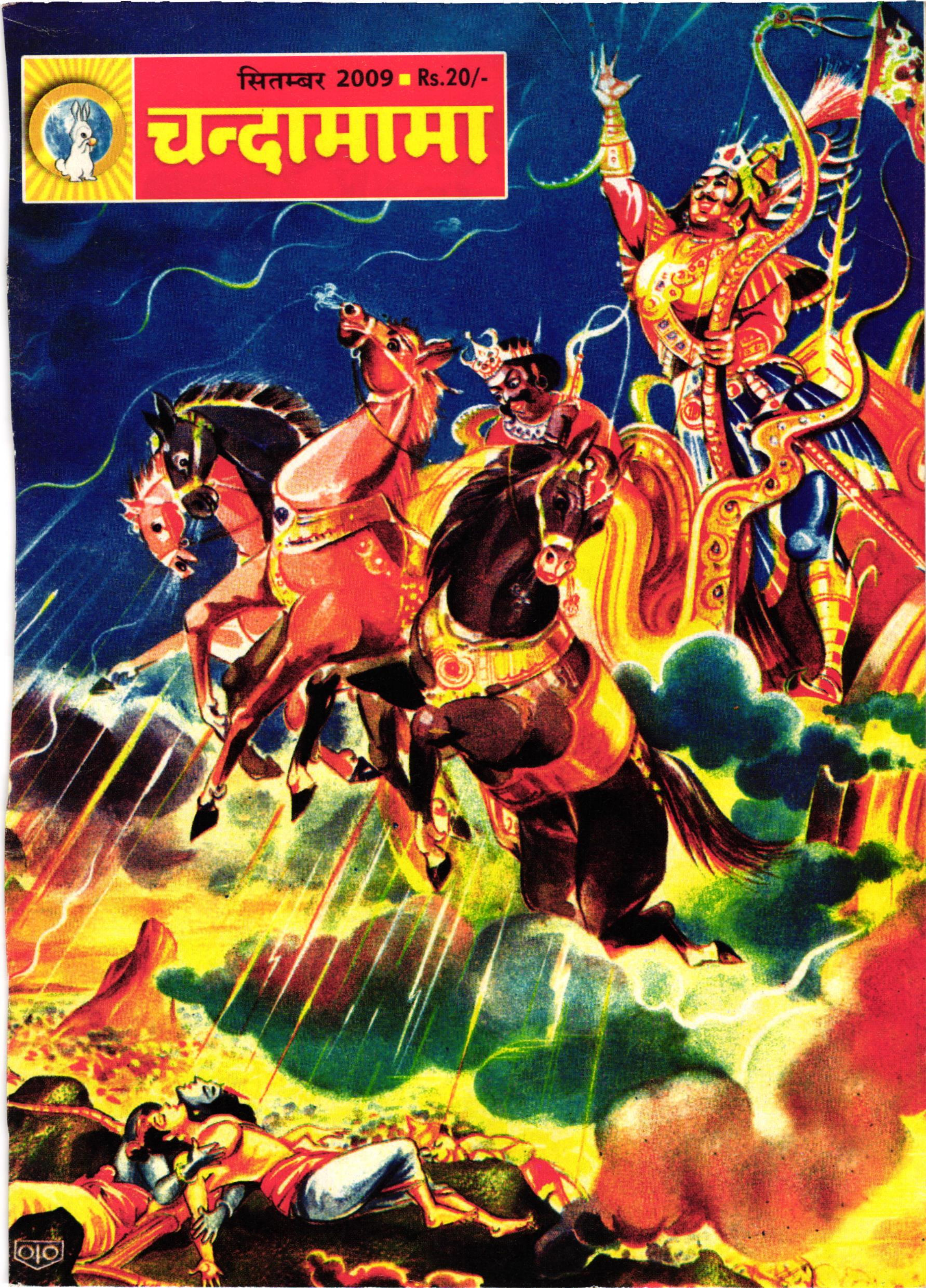

Visit : www.chandamama.com/parle

Wrigley's
BOOMER Super Bubble Gum
Jelly
THODA KHELO THODA KHAO
Mixed Berry Flavour
Orange Flavour
Watermelon Flavour
Mango Flavour
Grape Flavour
mudra 0809
BOOMER JELLY खाने से पहले क्या करना चाहिए ?
Jelly के साथ खेलना चाहिए
अपना होमवर्क खत्म करना चाहिए
5 का टेबल याद करना चाहिए
अपने बाल कटाने चाहिए
जीतो* बूमर CDs, सिपर्स और बहुत से दूसरे मज़ेदार प्राइज़ेस.
नाम:
पता:
फोन न.:
ई-मेल आईडी
चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड. नया न. 2/513 (पुराना न. 3/396), सनदीप एवन्यू ईस्ट, दूसरा मुख्य मार्ग, चिन्ना नीलनकरज, चैन्नई 600 041.

अंतरंग

चन्दामामा

सम्पुट-६० सितम्बर २००९ सञ्चिका - ९

* पाठकों का पन्ना ...०६
* कक्षा से बाहर के पाठ (शिक्षक दिवस) ...०७
* कपालिनी का फैसला (वेताल कथा) ...०९
* आर्य ...१५
* स्वादिष्ट पत्थर सूप (स्वीडन की लोक कथा) ...२५
* एक संदिग्ध नाम-२ (जातक कथा) ...२८
* तेज़ फार्मूला ...३०
* यूरेका ...३१
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-८ ...३२
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...३३
* पाताल दुर्ग (धारावाहिक) ...४१
* भारत दर्शक ...४७
* शाही खाना ...५२
* संदेह दूर हुआ ...५४
* पहरेदार ...५५
* दृश्य-भाव ...५८
* कैफ़ियत ...५९
* विवाह महोत्सव ...६१
* खेल दीप-स्तम्भ ...६२
* उदीयमान सितारा ...६४
* खेल-कूद का इतिहास ...६५
* समाचार झलक ...६६
* हँसते-हँसते हो जा लोटपोट ...७०
* चार निर्भीक ...७१

१९ रामायण (युद्ध काण्ड)

३४ युद्ध की तैयारी (अनुनिर्वा)

४८ कमल स्त्री (इतिहास के पन्ने)

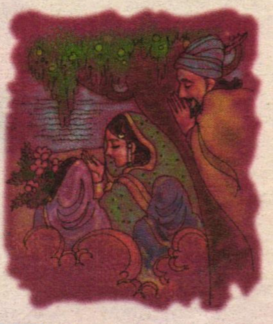

६७ पत्तियों का एल्बम (हास्य-कथा)

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

उत्सव का समय

वर्तमान समय में ''परिवर्तन ही एकमात्र सत्य है'' यह कहावत पूर्णतया प्रासंगिक है। यह *चन्दामामा* के विषय में एकदम सत्य है। हम पत्रिका के साथ-साथ संस्था में भी परिवर्तन देख रहे हैं।

सितम्बर ५, पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस है। यह वह दिन है जब हम शिक्षक दिवस मनाते हैं, एक ऐसा दिन जब हम अपने गुरुजनों का सत्कार करते हैं और हमें योग्य बनाने में उनके योगदान को स्वीकार करते हैं।

यह माह उत्सवों से भरा हुआ है। नवरात्रि पूरे देशभर में मनाई जाती है तथा गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और पश्चिमी बंगाल में तो यह अत्यंत धूमधाम से मनाई जाती है। इन नौ दिनों (नवरात्रि यानि नौ रातों) के दौरान देवी दुर्गा की पूजा-अर्चना की जाती है। लोग गुजरात के पारंपरिक नृत्य गरबा में भाग लेकर आनंद लेते हैं। नवरात्रि के उत्सव साथ ही आती है विजया दशमी या दशहरा। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन देवी दुर्गा ने महिषासुर राक्षस का संहार किया था। ऐसा भी माना जाता है कि इस दिन भगवान श्री राम ने रावण को पराजित किया था। दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय का त्यौहार है।

मुस्लिम इस माह में रमज़ान ईद मनाते हैं। रमज़ान-एक ऐसा महीना जिसमें मुस्लिम पूरे दिन रोज़ा रखते हैं और केवल रात में ही इफ़्तार (रोज़े के बाद का भोजन) करते हैं, के खत्म होने की निशानी ईद है। नमाज़ अदायगी, बड़ी दावतें और पारिवारिक मेल-जोल इस त्यौहार की ख़ास विशेषताएँ हैं। इसी माह के दौरान पवित्र कुरान अस्तित्व में आयी थी।

समय के साथ, हमारे त्यौहार मनाने के तरीकों और हमारे सत्कार, प्रेम व अपनत्व दिखाने के तरीकों में भी परिवर्तन आया है, परंतु त्यौहारों के प्रति हमारी भावनाएँ पूर्ववत हैं। इसी प्रकार, *चन्दामामा* भी, नवीन एवं पुरातन विश्व को जानने का अवसर देते हुए हमारे पाठकों की सेवा में सतत् तत्पर होगी।

हम कुछ नवीन स्तम्भ प्रारंभ कर रहे हैं तथा पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं। यह आपकी ही सक्रिय भागीदारी है जो *चन्दामामा* को लगातार बच्चों की सर्वाधिक पसंदीदा एवं लोकप्रिय पत्रिका बनाने के लक्ष्य को साधने में हमारी सहायता करती रहेगी।

संपादक : प्रशांत मुलेकर

सितम्बर २००९ Rs.20/-
***Founded by* B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Chairman : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Asst. Editor-Copy & Pre-Production : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designers : M. Nagaraj, B. Thirumal

CIRCULATION TEAM :
Mumbai : **Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager-Circulation*,** Mobile +91 9320565048
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industry, Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road, No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma, *Circulation Manager-North*,** Mobile +91 99110 91022
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali, *Asst. Circulation Manager -Karnataka*** , Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash, *Circulation Manager-East*,** Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval, *Sales Officer-Circulation*** Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : online@chandamama.com
For Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041 Phone +91 44 43992828, Fax +91 44 43992829
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, 2/513, Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Thiruvanmiyur, Chennai - 600 041. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

मैं *चन्दामामा* का बहुत सालों से पाठक और इसे बहुत चाहता भी हूँ। मेरे परिवार के सभी सदस्य *चन्दामामा* का हर माह में इन्तज़ार करते हैं। *चन्दामामा* आते ही पढ़ने के लिए आतुर होते हैं। *चन्दामामा* ने भारतीय संस्कृति को जिन्दा रखा है। *चन्दामामा* भारत के अलावा अन्य सभी देशों में जा पहुँचा है। इसी तरह *चन्दामामा* की तरक्की हो, यही शुभ कामनाएँ!

- अनुप उत्तमराव चौधरी, औरंगाबाद
एस.एम.एस. द्वारा

बारह वर्ष से *चन्दामामा* का नियमित पाठक हूँ। इसकी कहानियाँ मौलिक और अत्यन्त रोचक होती हैं। ***- प्रभात मिश्रा, पटना***

मैं पिछले १७ वर्षों से लगातार *चन्दामामा* पढ़ता आ रहा हूँ। यह हमेशा मेरी प्रिय पत्रिका रही है। ***- संदीप शर्मा, झांसी***

पुरस्कृत पत्र

चन्दामामा मेरे परिवार में तीन पीढ़ियों से पढ़ा जा रहा है। किशोर अवस्था में यह मेरी पसन्द था। उसके उपरांत मेरे पुत्र-पुत्रियों की पसन्दीदा बाल पत्रिकाओं में रहा और अब इसे मेरे नाती-नाते बड़े चाव से पढ़ते हैं। *चन्दामामा* के लिए एक सुझाव है। चूँकि *चन्दामामा* माह में एक बार प्रकाशित होता है, इसलिए 'और है' (क्रमशः) वाली चित्र कथाएँ तथा 'शेष अगले अंक में' वाली कहानियाँ न दें तो अच्छा है। इन कहानियों में वह आनन्द नहीं आता जो छोटी-छोटी कहानियों में आता है। एक ही अंक में समाप्त होने वाली कहानियाँ व चित्र कथाएँ ही प्रकाशित करें तो अधिक अच्छा रहेगा। शेष पढ़ने के लिए एक माह का अन्तराल काफी लम्बा होता है।

- अशोक कुमार जैन, बिजनौर

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं अथवा MLANG <space>
<Name, Age> <space> <HIN your feedback>
लिखकर 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

कक्षा से बाहर के पाठ

शिक्षक दिवस भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ.राधाकृष्णनन के जन्म दिन ५ सितम्बर को भारत में मनाया जाता है। विद्यालय का प्रत्येक दिन एक प्रचुर गृहकार्य के भार के साथ आता है। लेकिन यहाँ महत्त्वपूर्ण यह समझना है कि यह मात्र गृहकार्य नहीं है, बल्कि ये ज़िन्दगी के जरूरी पाठ हैं जो हम घर लाते हैं!

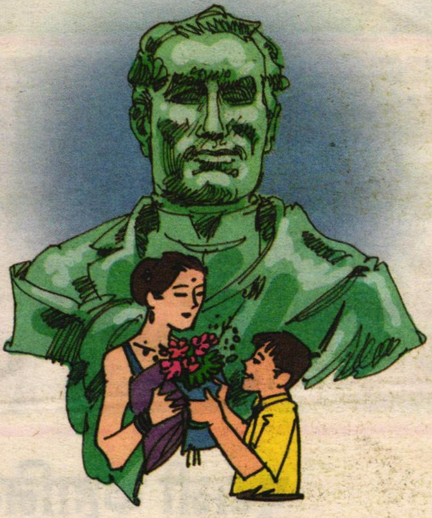

यह एक महान शिक्षक-लुईस ब्रेल की कहानी है। एक दुर्घटना की वजह से लुईस ब्रेल ३ वर्ष की उम्र में अंधे हो गए। वे १७ वर्ष की उम्र में शिक्षक बने। लुईस को ट्यूबरक्लोसिस बीमारी होने का पता चलने पर एक लंबी छुट्टी पर जाने के लिए कहा गया। लेकिन उनका हृदय अपने विद्यार्थियों और अपने काम के साथ था। उन्होंने अपनी किताबें पढ़ कर बिताए दिनों को याद किया। अगर उन्हें इस सुख से वंचित किया गया है तो इस वजह से अन्य विद्यार्थियों को वंचित नहीं किया जाना चाहिए! और इस सोच ने उन्हें ब्रेल वर्णमाला के निर्माण हेतु रात दिन कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

ब्रेल बहुत सादा जीवन जीते थे। स्वास्थ्य खराब होने पर भी उनका अध्यापन कार्य उच्च कोटि का था। वे अधिक से अधिक पैसा बचाते और इसे पुस्तकों तथा विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिखने का सामान खरीदने के लिए प्रयोग में लाते थे। किसी भी जरूरतमंद विद्यार्थी को वे बड़ी उदारता से धन भी दे देते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके मित्रों को एक डिब्बा मिला जिस पर लिखा था, ''बिना खोले जला दिया जाए''। उन्होंने जिज्ञासावश इसे खोल लिया ! उसमें सैकड़ों विद्यार्थियों के कर्ज़ के कागजात थे जिन्होंने धन लिया था!

ब्रेल अपने कार्यों के लिए ही नहीं बल्कि एक असाधारण शिक्षक के रूप में हमेशा याद किए जाएँगे। एक अच्छे शिक्षक की यह एक खास बात है- वह किसी एक विद्यार्थी पर प्रभाव नहीं डालते बल्कि पीढ़ियों को प्रभावित करते हैं।

आइए हम अपने सभी शिक्षकों को ''शिक्षक दिवस'' की बधाई दें!

चुटकुला भेजें। एसएमएस करें CJOKE <आपका जोक> 54646 पर

hindi.chandamama.com

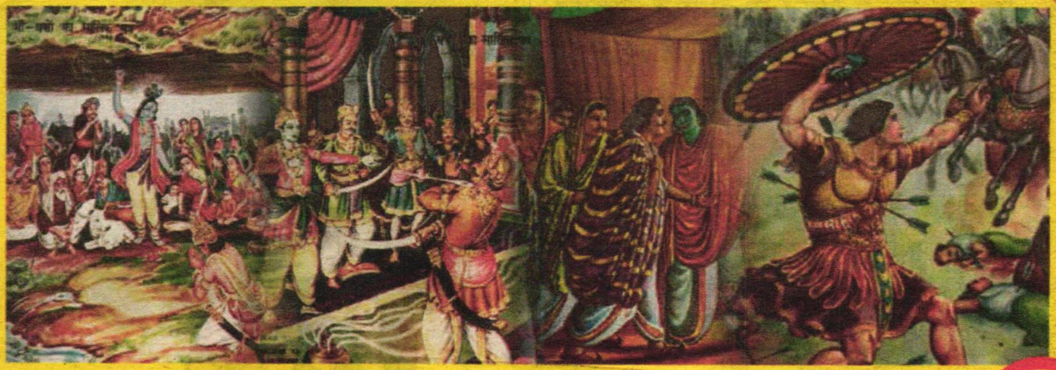

पुरानी कहानियों के शौकीन हैं?

hindi.chandamama.com पर हमारे संग्रह में ब्राउज़ करके अपनी पुरानी यादें ताज़ा करें।

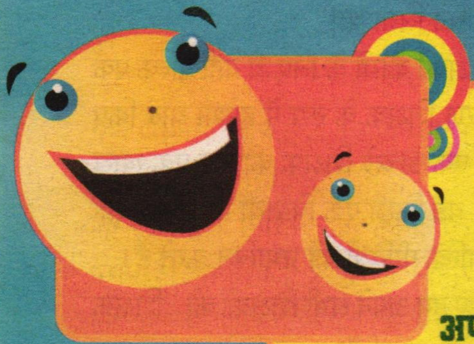

ग्राहक: वेटर, आइ एम ऑलरेडी लेट। विल द डोसास बी लाँग?

वेटर: नो सर, राउन्ड।

अपने दिन को बनाएँ खुशगवार... पढ़िये मज़ेदार चुटकुले hindi.chandamama.com **पर**

वेताल कथा

कपालिनी का फैसला

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, मैं यह नहीं जानता कि किस महत्वपूर्ण कार्य को साधने के लिए तुम इतना कष्ट उठा रहे हो? तुम्हारे इस हठ को देखते हुए प्रतीत होता है कि अपना लक्ष्य साध कर ही रहोगे। किन्तु मुझे संदेह है कि कार्य को साधने के उपरांत क्या उस दीक्षा, दक्षता को बनाये रख सकोगे? क्योंकि मैंने कई ऐसे लोगों को देखा है, जिनका हठ, कार्य के प्रति प्रगाढ़ विश्वास और आदर्श भाव पता नहीं क्यों निर्जीव हो जाते हैं। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं आदित्य नामक एक तर्कशील व नास्तिक की कहानी सुनाने जा रहा हूँ, जिसने मूढ़ विश्वासों का अंत करने का निर्णय लिया। प्रतिफल की आशा किये बिना वह अपने इस आदर्श को निस्वार्थ भाव से निभा रहा था। किन्तु अंत में

वह पूरी तरह परिवर्तित हो गया। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनना और इसका कारण बताना। फिर वेताल यों कहने लगा:

कौशिकारण्य की सारिका घाटी में गोडंग जाति के जंगली लोग रहते थे। वे अपने कायदे-कानूनों के लिए बहुत ही प्रसिद्ध थे। वे अपनी कपालिनी देवी की पूजा बड़े ही भक्ति-भाव से करते थे। वे इस देवी की सदा रक्षा करते थे। साथ ही, ज़रूरत पड़ने पर सही फैसला लेने के लिए उसकी शरण में जाते थे। उनका अटल विश्वास था कि उसका निर्णय सर्वथा सही होता है जिसका पालन करना उनका कर्तव्य है।

यह विषय सिंहपुर के निवासी आदित्य को मालूम हुआ। इस संबंध में जानकारी पाने की उसकी तीव्र इच्छा हुई। वह हर विषय में कार्य-कारण का सम्बन्ध जोड़ता था और इसी दिशा में सोचनेवाला तर्कशील था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि अंधविश्वासों का अंत हो। उसने उस देवी के संबंध में आवश्यक ज्ञान इकट्ठा किया और उसने ठान लिया कि तत्संबंधी सत्य-असत्यों को जानूँ। उसने गोडंग जाति की वेश-भूषा व उनकी भाषा का अभ्यास किया। इसके कुछ दिनों के बाद उसने अपनी कमर में बाघ का चर्म बांध लिया और सिर पर पंखों का मुकुट पहन लिया। फिर गोडंग जाति के युवक की ही तरह वहाँ जाने निकल पड़ा।

जब वह वहाँ पहुँचा, तब उसने देखा कि मंदिर के सामने लोग जमा हो गये हैं और प्रजा की उपस्थिति में ही उस कुल का प्रमुख व्यक्ति जाँच-पड़ताल कर रहा है।

शुभांगि उस गाँव की युवती थी। अपने प्रेमी बहुल के साथ वह जंगल में शिकार करने गयी थी। बाघ के आक्रमण के कारण उसकी मौत हो गयी। वहाँ की परिपाटी के अनुसार उस जाति की स्त्री जब खतरे में पड़ जाती है तब वहाँ उपस्थित पुरुष का यह कर्तव्य बनता है कि वह उसकी रक्षा करे। अगर ऐसा नहीं किया तो वह पुरुष दंडनीय है। इस वजह से बहुल को दोषी ठहराया जा रहा है, जो उस समय उस युवती के साथ था।

"साहब, मैं और शुभांगि दुपहर को जामुन खाने के बाद एक पेड़ के तले बैठकर गपशप कर रहे थे। इतने में उधर से गुजरती हुई एक हिरणी

नए संग्रह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर SMS करें

को देखा। मैं मना कर रहा था फिर भी शुभांगि धनुष-बाण लेकर उसके पीछे-पीछे भागी। थोड़ी देर बाद मैंने आर्तनाद सुना तो दौड़कर उस स्थल पर पहुँचा। पर इतने में वह बाघ भाग गया, जिसने शुभांगि को मार डाला था। इसलिए इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।'' यह सुनते ही नीलकंठ नामक एक युवक ने कहा, ''बहुल झूठ बता रहा है। शुभांगि का जीवित रहना उसे कतई पसंद नहीं था।'' प्रमुख ने पूछा, ''तुम कैसे यह कह सकते हो।''

''बहुल सुंदर युवतियों के पीछे पागल है। इसी वजह से वह मणिदीप जैसी सुंदरी शुभांगि के पीछे पागल था। वह उसका प्रेम पाने के लिए तड़प रहा था। शुभांगि भी उसे चाहने लगी, उसे ही सर्वस्व मानने लगी, लेकिन इतने में दुर्भाग्यवश किसी विषैले कीड़े के काटने से उसकी सुंदरता ग़ायब हो गयी। वह अब देखने लायक़ नहीं रही। तब से लेकर बहुल उसके प्रति विमुख हो गया। एक और सुंदरी को अपने जाल में फँसाना हो तो शुभांगि का रास्ते से हट जाना आवश्यक था। मेरा यह समझना है कि इसी वजह से उसने यह अपराध किया।''

''नीलकंठ पहले ही से शुभांगि को लेकर मुझसे ईर्ष्या करता है। मेरे और उसके बीच में बैर चला आ रहा है। मैंने हाल ही में उसके एक रंग-बिरंगे विचित्र पक्षी को पिंजड़े से निकालकर बाहर छोड़ दिया, जिसके कारण वह मुझसे प्रतिकार लेना चाहता है। इसलिए अनावश्यक ही मुझपर यह दोष थोप रहा है।'' बहुल ने सफाई दी।

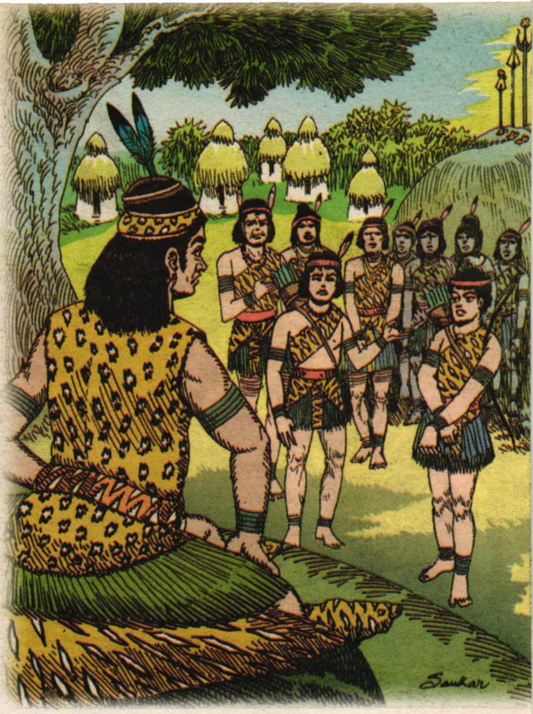

दोनों के बयानों में सत्यता है, उन्हें टाला नहीं जा सकता, वे वास्तविक लगते हैं, इसलिए वहाँ उपस्थित लोगों ने एक होकर कहा, ''बहुल को देवता के निर्णय के लिए सौंपा जाए।'' इसलिए गाँव के प्रमुख ने मंदिर के पुजारी गरुड़वीक्षण से अपना कर्तव्य निभाने की विनती की।

चूँकि उनकी कुलदेवी सर्वांतर व्यापी है, इसलिए उसे कहीं भी जो भी होता है, मालूम होता है। वहाँ की प्रजा का अटल विश्वास है कि यह निर्णय लेने की उसमें अपूर्व शक्ति है कि कौन अपराधी है और कौन निरपराधी। लोगों का यह भी मानना है कि गरुड़वीक्षण परम भक्त है, किसी के प्रति पक्षपात दिखानेवाला पुजारी नहीं है। अमावस्या के दिन पुजारी ने उपवास रखा और शाम को मंदिर में पूजा करने लगा। थोड़ी देर बाद

वेताल की और कहानियाँ पढ़िये hindi.chandamama.com के संग्रहों में

ने शुभांगि पर आक्रमण किया, तब मैं पेड़ के पीछे छिप गया। देवी ने मुझे सही दंड दिया।'' कहता हुआ बहुल ज़ोर-ज़ोर रोने लगा। वह समझ गया कि किसी भी प्रकार से वह अंतर्यामी कपालिनी देवी से झूठ नहीं बोल सकता।

उसके माता-पिता भी उससे लिपटकर रोने लगे। जनता भी कुलदेवी के निर्णय पर बेहद खुश हुई। कहने लगे कि आगे से कोई भी किसी युवती की तरफ़ आँख उठाकर देखने का साहस नहीं करेगा।

यह सब कुछ आदित्य को बहुत खटका। उसने रात को मंदिर में जो हुआ, देख लिया। उस रहस्य को बताने के लिए वह सही समय की प्रतीक्षा में था।

चार दिनों के बाद आदित्य ने बहुल के बाप शंखचूड़ को जंगल में देखा। बेटे की जो बुरी हालत हुई, उसपर अब भी उसका शोक नहीं घटा, फिर भी लकड़ियाँ काटने और उन्हें बेचकर पेट भरने उसे जंगल आना ही पड़ा।

आदित्य ने उसके पास आकर कहा, ''तुम्हारे बेटे के साथ घोर अन्याय हुआ है। गरुड़वीक्षण जब स्नान करने प्रपात के पास गया तब छिपकर मैं उसके घर के अंदर घुसा और पूजा के मंदिर के ही पास के पुर्जे को दबाया। मूर्ति तुरंत वहाँ से हटी और वहाँ से सुरंग मार्ग दिखायी पड़ा। तुम जाओ और देखकर मुझे बताना कि वह मार्ग कहाँ ख़त्म होता है।''

शंखचूड़ ने आदित्य के बताये अनुसार ही

बहुल को कपालिनी की मूर्ति के सामने के पत्थर के स्तंभ से बाँधा गया और पुजारी ने उसे कोई शरबत पिलाया। फिर उसने लोगों को वहाँ से भेज दिया और अंदर जाकर दरवाज़े बंद कर दिये।

उस रात को गाँव के लोगों ने अपने घरों के दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद कर दीं और ड़रते हुए समय बिताया। उन्हें इस बात का डर था कि कोई बाहर आएगा तो वह रक्त उगलकर मर जायेगा।

प्रातःकाल मंदिर से बहुल की चिल्लाहटें सुनायी पड़ने लगीं। लोग दौड़कर वहाँ पहुँचे। उन्होंने देखा कि उसकी आँखों से खून बह रहा है और वह खून उसके गालों पर से बहता हुआ साफ़ दिखाई दे रहा है।

''उस दिन मैं ही बाघनी की तरह चिल्ला पड़ा, जिससे बाघ उस तरफ आकर्षित हो। जब बाघ

चन्दामामा की रामायण खरीदें hindi.chandamama.com पर

दूसरे दिन काम किया। यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मंदिर के पास ही के पुजारी के घर से वह सुरंग मार्ग मंदिर में जाता है।

उस दिन दुपहर को वह आदित्य से जंगल में मिला और उसने जो देखा, वह सब बताया।

''मैं अब तुम्हें बताता हूँ कि असली बात क्या है। पुजारी ने तुम्हारे बेटे को जो शरबत पिलाया, उसमें नशीली दवा है। मैंने छिपकर गरुड़वीक्षण का पीछा किया और देखा कि वह स्वयं तुम्हारे बेटे की आँखों में सलाख चुभो रहा है। चूँकि तुम्हारा बेटा नशे में था, इसलिए उसने समझा कि कुलदेवी ही यह काम कर रही है। कुलदेवी के नाम पर पुजारी ने तुम्हारे परिवार के साथ बड़ा अन्याय किया।'' आदित्य ने बताया।

उसका बताया विवरण सुन वह चकित रह गया और उसने तुरंत कहा, ''हमारी जाति का कोई भी आदमी कुलदेवी कपालिनी पर संदेह नहीं करता। इतना साहस करके तुमने यह रहस्य जान लिया। इसका यह मतलब हुआ कि तुम हमारी जाति के नहीं हो, सभ्य समाज के हो और नास्तिक भी हो। मैंने ठीक कहा न?'' शंखचूड़ ने कहा।

''हाँ'' कहते हुए आदित्य ने अपने बारे में सविस्तार बताया।

''यद्यपि दंड गरुड़वीक्षण ने दिया, फिर भी मानता हूँ कि मेरे बेटे ने अपराध किया। मेरे बेटे को सज़ा दी गयी है, इसका मुझे दुख नहीं है, देवी दंड देगी, इस भय से मेरे गाँव का कोई भी आदमी पाप नहीं करता या कम से कम पाप

करने से ड़रता है। देवी के प्रति भय न हो तो हमारे गाँव में अराजकता फैल जायेगी। तुमने जो रहस्य खोज निकाला, वह रहस्य, रहस्य ही बनकर रहे, इसके लिए तुम्हें मरना होगा। इस रहस्य को मैं भी जान गया, इसलिए मुझे भी ज़िन्दा रहना नहीं चाहिये।'' कहते हुए उसने आदित्य को कसकर पकड़ लिया और पर्वत पर से दोनों एकसाथ अगाध में गिर गये।

शंखचूड़ जैसे ही अगाध में गिरा, वह मर गया। सौभाग्यवश आदित्य झाड़ियों में गिरा, इसलिए वह बच गया। परंतु बाद में आदित्य सिंहपुरी पहुँचा और नौकरी छोड़ दी। किन्तु उसने किसी से भी यह रहस्य नहीं बताया।

वेताल ने यह कहानी कह चुकने के बाद विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, आदित्य भली-भांति

विक्रम वेताल की पहली कहानी पढ़िये hindi.chandamama.com पर

जानता है कि अंध विश्वास मानवों के लिए कितने अहितकर हैं, फिर भी वह क्यों चुप रहा। उसने इस रहस्य को क्यों प्रकट नहीं किया? इस रहस्य को जानने के लिए अपने प्राण को भी खतरे में डाला, फिर भी वह क्यों चुप रह गया। उस आदर्शवादी ने अपना निर्णय क्यों बदल लिया? पहाड़ पर से गिर जाने के कारण क्या उसमें प्राण भय उत्पन्न हो गया? अपने सारे आदर्शों को तिलांजलि दे दी? क्या इसके कोई दूसरे कारण हैं? मेरे संदेहों के उत्तर जानने के बाद भी तुम चुप रहोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा, ''विश्वासों में से कौन-सा विश्वास सच है और अंध विश्वास क्या हैं, इन्हें अलग-अलग करके बताना आसान बात नहीं है। देश, काल परिस्थिति के अनुसार ये बदलते रहते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जिस विश्वास से लाभ पहुँचता है, उसमें ग़लती ढूँढ़ने पर भी निकाली नहीं जा सकती। दैनिक जीवन में हम कितने ही विश्वास देखते हैं। दैवभक्ति, पाप भीति आदि भी ऐसे ही विश्वास हैं। कुछ परिस्थितियों में दैवभीति मानवों को सीमा में रखते हैं। कुछ दशाओं में अगर ये नहीं हों तो उच्छृंखलता व अराजकता फैलती है और ये बहुत ही खतरनाक साबित हो सकती हैं। एक विश्वास को बनाये रखने के लिए शंखचूड़ ने प्राण-त्याग किया और इसी ने आदित्य की आँखें खोल दीं। यह याद रहे कि गरुड़वीक्षण ने अपने स्वार्थ के लिए देवी की आड़ में यह नाटक नहीं किया। गाँव के लोगों की भलाई के लिए, न्याय और अन्याय को दृष्टि में रखकर, धर्म और अधर्म को मानते हुए, देवी पर ही विश्वास रखकर उसने बहुल को दंड दिया। इसके लिए पुजारी को अपराधी ठहराना उचित नहीं है। आदित्य ने इनके बारे में बखूबी सोच विचार किया और इसीलिए उसने रहस्य को रहस्य ही रहने दिया।''

राजा के मौनभंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - कुमार गार्गेय की रचना)

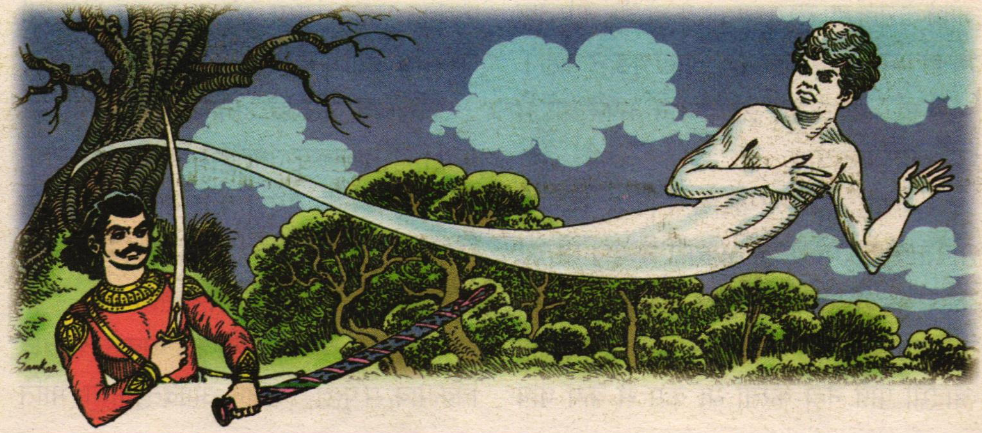

चन्दामामा के वीरों के बारे में जानें hindi.chandamama.com पर

8
आर्य
लाल मणि की खोज
चित्रः गाँधी अय्या
आर्य और थार्विक सलगाज़ी के जंगलों में मिलते हैं और तकरीबन लड़ने को होते हैं तभी मादा-भेड़िया उनको टोकती है। वह आर्य को जाने के लिए कहती है।
याद रखो ! इसके लिए तुमने कहा था।
कविताएँ छोड़ो आगे बढ़ो।
एक शक्तिशाली झपट्टे साथ मादा भेड़िया थार्विक पर कूदती है। वह लड़खड़ाता है लेकिन दोबारा से अपना संतुलन बना लेता है...
...उसकी तलवार की रुपहली चमक रात की हवा को खोजती है...
...लेकिन मादा भेड़िया एक अभ्यस्त योद्धा है...
...उसकी क्रोधपूर्ण गुर्राहट से वह उस दौरान हंसते हुए, तेज़ी से बचाव करती है।

तुम्हारे क्रोध ने तुम्हें परास्त कर दिया।
कौन हो तुम?
एक समय की बात है, एक राजकुमारी थी।
तब यह सच है! तुम वापस आ गए!
मैं कभी गया नहीं था।

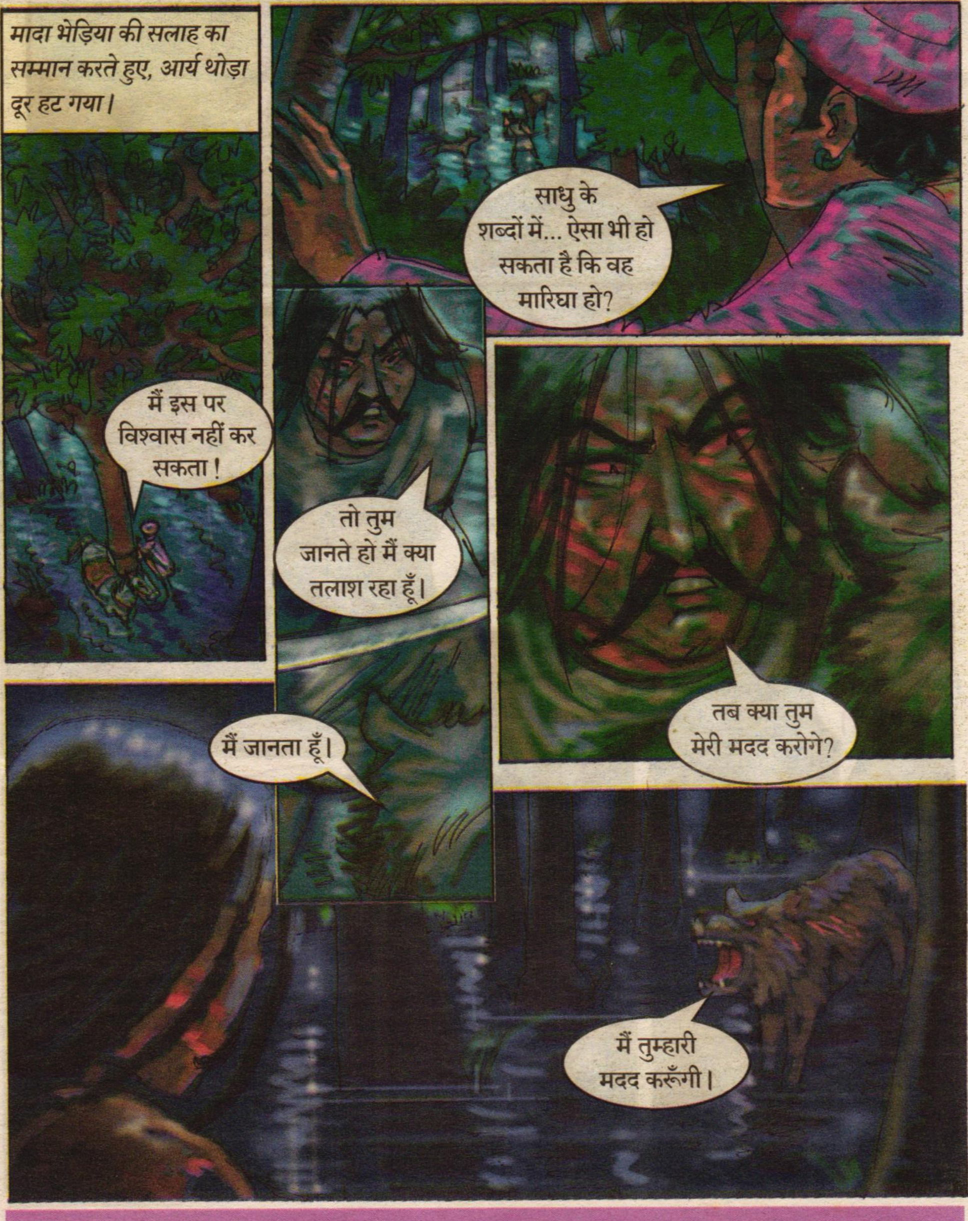

मादा भेड़िया की सलाह का सम्मान करते हुए, आर्य थोड़ा दूर हट गया।
साधु के शब्दों में... ऐसा भी हो सकता है कि वह मारिघा हो?
मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता !
तो तुम जानते हो मैं क्या तलाश रहा हूँ।
तब क्या तुम मेरी मदद करोगे?
मैं जानता हूँ।
मैं तुम्हारी मदद करूँगी।

वे दोस्त बनते प्रतीत हो रहे हैं...
... तब उसने मुझे क्यों बचाया?
जो वह दिखती है वह है नहीं।
लेकिन फिर, बगैर विश्वासघातों के एक रहस्य में क्या रखा है?
अभी जारी है...

युद्ध काण्ड - ९

सुग्रीव जब कुम्भकर्ण का कान वगैरह काटकर, एक छलांग में राम के पास चला गया, तो कुम्भकर्ण खून से लथपथ पहाड़ की तरह कुछ देर खड़ा रहा। फिर युद्ध भूमि में चला गया। उसे ख्याल आया कि उसके हाथ में कोई हथियार न था। उसने रास्ते में एक भयंकर मुद्‌गर ले लिया।

युद्ध भूमि में वह गुस्से में जो कोई दिखाई देता, उसे खाने लगा। कुम्भकर्ण ने यह भी न जाना कि वह वानरों के साथ राक्षसों को भी निगल रहा है। वह एक उन्मत्त हाथी की भाँति अपना पराया भूल गया था।

वानर जब उससे छूटकर भागने लगे, तो कुम्भकर्ण उनका पीछा करके हजारों की तादाद में वानर खा गया।

यह देख लक्ष्मण ने कुम्भकर्ण का मुकाबला किया और उस पर बाण छोड़े। परन्तु उन बाणों की कुम्भकर्ण ने बिलकुल परवाह न की। वह वानरों को खाता, राम की ओर चलने लगा।

राम ने एक भयंकर अस्त्र कुम्भकर्ण की छाती पर मारा। उस चोट के कारण कुम्भकर्ण के मुख से ज्वालाएं निकलने लगीं। इस समय वह साक्षात ज्वालामुखी प्रतीत हो रहा था। वह अधिक देर खड़ा न रह सका और गिर पड़ा।

कुम्भकर्ण फिर न उठ खड़ा हो, यह सोच लक्ष्मण ने वानरों को उस पर खड़े होने के लिए कहा। परन्तु उन वानरों को कुम्भकर्ण ने चींटियों की तरह हटा दिया।

यह देख राम कुम्भकर्ण के पास आये। कुम्भ-

राम जन्म के बारे में पढ़िये 'राम अवतार' में hindi.chandamama.com पर

कर्ण पर्वत की तरह झूमता-झूमता राम के पास आया।

राम ने उसे देखकर कहा, ''कुम्भकर्ण! आओ, तुमने इन्द्र को जीता था न, मैं इन्द्र नहीं हूँ। राम हूँ। मैं तुम्हें एक क्षण में मार दूँगा।''

''मैं भी कोई विराध नहीं हूँ। न कबन्ध हूँ, न खर, न बाली, न मारीच ही, कुम्भकर्ण हूँ। देखें, तुम्हारा बल कितना है। उसके बाद तुम्हें खा जाऊँगा।'' कुम्भकर्ण ने कहा।

राम के मामूली बाण कुम्भकर्ण का कुछ न बिगाड़ सके। वे बाण जो शाल वृक्षों को पार करके बाली को लगे थे, कुम्भकर्ण पर व्यर्थ गये। वह मुद्‌गर इस तरह घुमाता गया कि राम के कुछ बाणों से भी बचता गया।

तब राम ने कुम्भकर्ण पर वायव्यास्त्र का प्रयोग किया। उसने कुम्भकर्ण का वह हाथ काट दिया, जिससे उसने मुद्‌गर पकड़ रखा था। कुम्भकर्ण जोर से चिल्लाया। जब उसका हाथ गिरा, तो उसके नीचे कई वानर कुचलकर मर गये।

एक हाथ के चले जाने पर, कुम्भकर्ण ने दूसरे हाथ से एक महावृक्ष उठाकर, राम पर फेंका।

राम ने ऐन्द्रास्त्र से कुम्भकर्ण के दूसरे हाथ को भी काट दिया। उन्होंने फिर दो अर्ध चन्द्र बाणों से कुम्भकर्ण के पैर काट दिये।

कुम्भकर्ण पर्वत की तरह टूटकर गिर गया परन्तु गिरते समय भी उसने अनगिनत वानरों को अपने धड़ के नीचे कुचल दिया। जब उसका गुफ़ा-सा मुँह कुछ गरज रहा था, राम ने उसके मुख में बाण छोड़े। कुम्भकर्ण जब मूर्छित होने की स्थिति में था, तो राम ने एक दिव्यास्त्र से कुम्भकर्ण का सिर काट दिया।

महाबलशाली कुम्भकर्ण के मरते ही, राक्षसों में हाहाकार मच गया। वानरों के मुँह खिल से गये। यह जानते ही कि कुम्भकर्ण राम के हाथों मारा गया, रावण थोड़ी देर मूर्छित रहा और फिर भाई के लिए दुखी होने लगा।

भाई के लिए दुखी होते रावण को आश्वासन देकर त्रिशूर, अतिकाय, देवान्तक, नरान्तक, महोदर, महापार्श्व छहों राक्षस योद्धा युद्ध के लिए निकल पड़े।

फिर राक्षस और वानर सेनाओं में घोर युद्ध होने लगा। नरान्तक वानर सेनाओं में घुस गया और अपने भालों से वानरों को सैकड़ों की संख्या

इन्द्र ने करम्भ का वध कैसे किया पढ़ें hindi.chandamama.com पर

में मारने लगा। तब सुग्रीव ने अंगद को उससे युद्ध करने के लिए भेजा।

अंगद ने नरान्तक के सामने जाकर कहा, ''इस भाले को साधारण वानरों पर क्यों उपयोग करते हो? उससे मुझे मारो।''

नरान्तक ने अपने भाले को अंगद की छाती पर मारा। वह टूटकर गिर गया। अंगद ने जब नरान्तक के घोड़े पर अपने हाथ से वार किया तो उसका सिर टूटकर गिर गया। अब नरान्तक ने जब मुट्ठी बाँधकर मारा तो अंगद के सिर पर चोट लगी और खून बहने लगा।

''अरे, इसमें इतना बल है?'' चकित होकर, अंगद ने मुट्ठी बाँधकर नरान्तक की छाती पर मारा, वह खून उगलता मर गया।

यह देख महोदर, देवान्तक, त्रिशूर ने अंगद पर आक्रमण किया। उन तीनों से जब अंगद अकेला लड़ रहा था, तो हनुमान और नील उसकी सहायता के लिए आये और हनुमान ने देवान्तक को उसका सिर तोड़कर मार दिया। इसी तरह नील के हाथ महोदर मारा गया। फिर हनुमान ने त्रिशूर से काफ़ी देर तक युद्ध किया और उसी की तलवार से उसकी गरदन काट दी।

इस बीच राक्षस वीरों में एक महापार्श्व ने भयंकर गदा लेकर जब वानरों पर हमला किया, तो ऋषभ नामक वानर वीर उससे जा भिड़ा। यद्यपि वह उसकी गदा से घायल हो गया था, तो भी उसने उसी की गदा से महापार्श्व को मार दिया। महापार्श्व के मरने पर राक्षस सैनिक हथियार

छोड़कर एक क्षण भी रुके बिना मैदान से भाग निकले।

राक्षसों को भागता देखकर, अतिकाय को बड़ा गुस्सा आया। वह दूसरे कुम्भकर्ण की तरह वानर सेना पर लगातार हमला करने लगा।

राम ने दूरी पर अतिकाय को देखकर आश्चर्य से विभीषण से पूछा, ''पर्वत की तरह आनेवाला यह वीर कौन है? इसके धनुष भी असाधारण हैं।''

''यह रावण और धान्यमालिनी का पुत्र अतिकाय है। लंका के लिए यह भी एक किले की तरह है। ब्रह्मा की आराधना करके, इसने भी दिव्यास्त्र पाये हैं। यदि इसकी जल्दी खबर न ली गई, तो वानर सेना को यह बाणों से नष्ट कर सकता है।'' विभीषण ने कहा।

चन्दामामा के वीरों के बारे में जानें hindi.chandamama.com पर

इस बीच अतिकाय सिंहनाद करता वानर सेना में घुसा। कुमुद, द्विविद, मैन्द, नील, शरभ ने एक होकर उसका सामना किया। उसने उन सबको लोहे के बाणों से परास्त किया। फिर वह राम के पास आया। "मैं छोटे मोटे लोगों से युद्ध नहीं करता। कोई समर्थ हो, तो युद्ध के लिए आ सकता है।"

यह सुन लक्ष्मण उसके सामने आया।

"लक्ष्मण, तुम छोटे हो मुझ से युद्ध नहीं कर सकते। क्यों व्यर्थ अपने प्राण खोते हो?" अतिकाय ने कहा।

"तुम अपना पराक्रम बातों में न दिखाओ, हाथों से दिखाओ", लक्ष्मण ने कहा।

दोनों बाणों से युद्ध करने लगे। एक दूसरे पर बाणों से वार किया। एक दूसरे के बाण उन्होंने काटे, आपस में एक दूसरे के अस्त्रों को काटा। चूँकि अतिकाय ने अभेद्य कवच धारण कर रखे थे, इसलिए लक्ष्मण के बाण उसका कुछ न बिगाड़ सके। यह देख, लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र का उपयोग करके अतिकाय का सिर काट दिया।

छहों महायोद्धा राक्षसों की मृत्यु का समाचार सुनकर, रावण दुख के समुद्र में डूबने लगा। तब इन्द्रजित ने अपने पिता की दशा को देखकर कहा, "इन्द्रजित के जीते जी यह क्या चिन्ता? मैं अभी जाकर उन राम और लक्ष्मण दोनों को मारकर आता हूँ।" रावण इसके लिए मान गया।

इंद्रजित, अपने पिता, रावण से विजयी होने का आशीर्वाद प्राप्त कर उत्तम घोड़ों के रथ पर सवार होकर युद्धभूमि के लिए निकल पड़ा। धनुर्धर राक्षस वीर हाथियों पर, घोड़ों पर सवार होकर मुद्‌गर, खड्ग, गदा लेकर इन्द्रजित के साथ चल दिये।

युद्धभूमि में अपने रथ के चारों ओर राक्षसों का पहरा रखकर इन्द्रजित ने होम किया और एक काली बकरी की बलि भी दी। बिना धुँए के आग जलकर उसकी विजय की सूचना दी।

फिर इन्द्रजित ने ब्रह्मास्त्र जपकर उससे अपने धनुष और रथ को भी मन्त्र दिया। सब के जाने के बाद, इन्द्रजित अपने रथ और सारथी के साथ आकाश में अन्तर्धान हो गया।

राक्षस सेना ने असाधारण उत्साह के साथ युद्ध के लिए कूच किया।

वानरों पर जोर शोर से आक्रमण आरम्भ

चन्दामामा की रामायण खरीदें hindi.chandamama.com पर

हुआ। प्रमुख वानर वीर गन्धमादन, नल, मैन्द, गज, जाम्बवन्त, सुग्रीव, ऋषभ, अंगद, द्विविद आदि इन्द्रजित के छोड़े हुए, बाणों से घायल हो गये।

कुछ मूर्छित हो गये, जो मारे गये वे तो असंख्य ही थे। इन्द्रजित आकाश में कहाँ था, यह वानर न जान सके।

इन्द्रजित द्वारा बरसाये गये बाण राम लक्ष्मण पर भी गिरे। राम ने लक्ष्मण से कहा, ''इस इन्द्रजित से कैसे युद्ध किया जाये, जो दिखाई भी नहीं देता है। उसकी चोट के कारण सारी वानर सेना मूर्छित पड़ी है। यदि हम यह दिखायें कि हम भी मूर्छित हैं, तो इन्द्रजित सन्तुष्ट होकर चला जायेगा।''

राम लक्ष्मण को भी मूर्छित देख, इन्द्रजित सन्तुष्ट होकर लंका वापस चला गया।

राम लक्ष्मण को मूर्छित अवस्था में देखकर वानर सेना भी चिन्तित हो उठी। सुग्रीव, नील, अंगद, जाम्बवन्त सचमुच सुध-बुध खोये बेहोशी में थे।

राम लक्ष्मण को देखकर विभीषण ने चिन्तित वानरों से कहा, ''तुम फिक्र न करो, राम, लक्ष्मण मूर्छित नहीं हैं, यूँही अपने को मूर्छित दिखा रहे हैं।''

रात हो गई थी। अन्धकार था, जो मूर्छित वानर सोए हुए थे, कहा न जा सकता था, उनमें कौन मूर्छित थे और कौन मृत। इसलिए हनुमान और विभीषण चिराग लेकर उनको खोजने लगे।

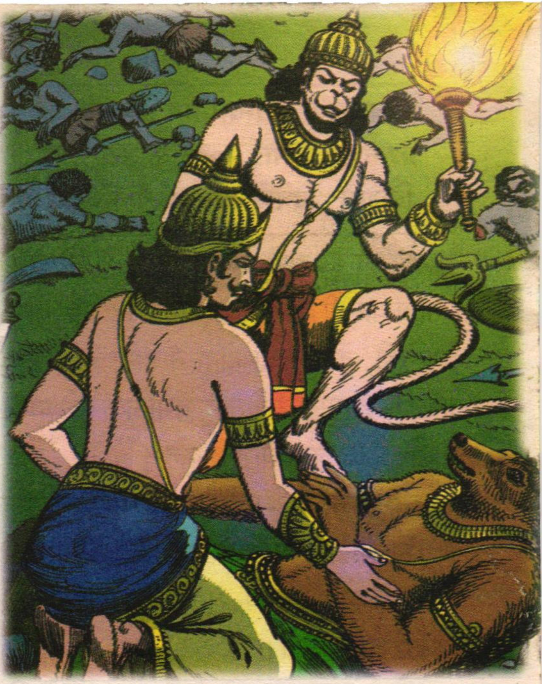

इन्द्रजित ने उस दिन शाम को पाँच घड़ी में सड़सठ करोड़ वानरों को मार दिया था। जो गिर गये थे, उनमें सुग्रीव, अंगद, नील, शरभ आदि कितने ही दिखाई दिये। वे जाम्बवन्त को खोजने लगे। महावृद्ध जाम्बवन्त उनको जीवित दिखाई दिए।

विभीषण ने जाम्बवन्त के पास आकर कहा, ''बाबा, जीवित तो हो न?''

जाम्बवन्त ने दबी आवाज में कहा, ''क्या यह विभीषण ही बोल रहा है? मुझे आँखों से दिखाई नहीं दे रहा है। क्या हनुमान ठीक है?''

''बाबा, तुम सुग्रीव, अंगद, राम, लक्ष्मण के बारे में न पूछकर हनुमान के बारे में क्यों पूछ रहे हो?'' विभीषण ने पूछा।

''पूछ रहे हो कि हनुमान के बारे में क्यों पूछा

मगर का सामना करके क्या गजेन्द्र बचा? देखें hindi.chandamama.com

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी जुलाई २००९ के उत्तर : B
विजेता : दिनेश चन्द्र भाटी, सिरोही

है? बताता हूँ। सुनो, हनुमान यदि है, तो वानर सेना मरकर भी है। यदि हनुमान न रहा और वानर सेना रही, तो उसका होना न होना बराबर है। जब तक हनुमान जीवित है, तभी तक मुझे प्राणों से मोह है।'' जाम्बवन्त ने कहा।

हनुमान ने, जो ये बातें सुन रहा था, जाम्बवन्त के पास आकर, उसके पैरों पर पड़कर नमस्कार किया। हनुमान का स्वर सुनते ही जाम्बवन्त की जान में जान आयी।

''बेटा, हनुमान इधर आओ। इन वानरों की रक्षा का भार अब तुम पर ही है। यह काम तुम्हारे सिवाय कोई नहीं कर सकता। तुम्हें समुद्र पार करके हिमालय तक जाना होगा। वहाँ सबसे ऊँचे शिखर ऋषभ और कैलास हैं। उन दोनों के बीच में औषधि पर्वत है। उसके शिखर पर कान्तिवाली चार दिव्य औषधियाँ हैं। उनका नाम है विशल्य-करनी, संधानकरनी, मृतसंजीविनी, सौवर्णकरनी

चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी

अतिकाय की माँ कौन थी?

(a) सिंहिका (b) मंदोदरी (c) धान्यमालिनी

आप अपना उत्तर CRQ <a/b/c> <space> <Name, Lang, Place> लिखकर 54646 पर SMS कर दो। बेतरतीब चुने एक भाग्यशली विजेता को चन्दामामा का 'कॉमिक काम्बो पैक' दिया जाएगा।

इन चारों औषधियों को लेकर बिना विलम्ब किये जल्दी आओ।''

जाम्बवन्त ने हनुमान से कहा कि इन औषधियों से वानरों को जिलाया जा सकता है।

तुरंत हनुमान रात के समय एक पर्वत शिखर पर खड़े होकर शरीर बढ़ाकर जोर से चिल्लाया ताकि राक्षस डर डरा जायें। फिर वह आकाश में उड़ा।

विष्णु पुराण की कथाएँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

स्वादिष्ट पत्थर सूप

एक बार एक थका हुआ यात्री एक गाँव से गुज़र रहा था। रात का समय था और उसे सन्देह हो रहा था कि किसी एक घर में उसे आश्रय मिल पाएगा। उसने अपनी आँखें बंद कीं और मन में सोचा, "कितना अच्छा हो कि गर्मागर्म सूप के साथ एक गर्म आग के सामने बैठने को मिल जाए।" कुछ दूरी पर उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी और इस आशा में कि उसे कुछ खाने को मिल जाएगा, वह उस तरफ चल पड़ा।

उसने दरवाज़ा खटखटाया और एक बूढ़ी औरत ने दरवाज़ा खोल कर अजनबी आँखों से उसे देखा। "क्या आप मुझे रात भर रुकने के लिए जगह दे देंगी?" यात्री ने पूछा। "बिलकुल नहीं। यह रास्ते की सराय नहीं है!" उसने गुस्से से कहा। "मैंने दिन भर से कुछ खाया भी नहीं है। अगर खाने के लिए थोड़ा कुछ मिल जाए तो मैं आपका बड़ा आभारी रहूँगा!" यात्री ने कहा। "मेरे पास स्वयं खाने के लिए भोजन नहीं है, उस यात्री के लिए क्या होगा जो मेरा दरवाज़ा खटखटाता है," वह बुदबुदाई।

बूढ़ी औरत धाड़ से दरवाज़ा बंद कर देती परंतु यात्री इतना आग्रही था कि आखिरकार औरत को दया आ गयी और उसने उसे घर के अंदर ले लिया। "लेकिन ध्यान रहे, मुझसे उम्मीद न करना कि साथ में खाना भी दूँगी।" "आपका धन्यवाद! ठंडी रात में अकेले बाहर घूमने से एक गर्म ज़मीन पर सोना अधिक अच्छा है," उसने कहा। उसने करवट बदली और मुड़कर ज़मीन पर लेट गया क्योंकि उसका पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा था।

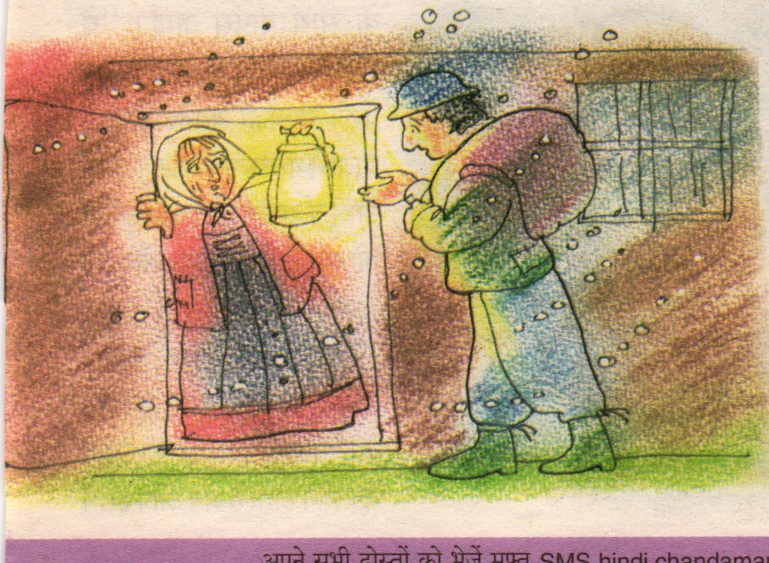

यात्री औरत से बोला, "ये शर्म की बात है कि हम इस प्रकार भूखे हैं। मेरे पास एक जादुई पत्थर है। अगर आप मुझे वह स्टील का

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त SMS hindi.chandamama.com से

बर्तन यहाँ लाकर दे सकती हैं, तो मैं अपने लिए स्वादिष्ट पत्थर सूप बना सकता हूँ!'' बूढ़ी औरत ने उसे अविश्वास से घूरा। ''क्या कहा तुमने, पत्थर सूप?'' उसने पूछा। ''हाँ, बिलकुल!'' यात्री ने घमंड से कहा।

''आप बहुत सी चीज़ें सीखते हैं, जब आप दूर-दराज़ यात्रा करते हैं!'' उसने कहा। उसने अपना थैला खोला और सावधानी से कागज़ में लपेटा हुआ एक पत्थर निकाला।

औरत ने सोचा, 'मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत सी चीज़ें देखी और सुनी हैं... लेकिन पत्थर सूप? कभी नहीं! पड़ोसन का मुँह खुला का खुला रह जाएगा जब मैं उसे इसके बारे में बताऊँगी!' वह रसोई की तरफ लपकी और स्टील का बर्तन ले आई। यात्री ने बर्तन आग पर रखा, उसमें पानी भर कर आराम से पत्थर बर्तन में छोड़ दिया। वह लकड़ी के चमचे को बर्तन में घुमाने लगा। उसे पास से देखने के लिए औरत ज़मीन पर बैठ गई।

कुछ समय बाद, आदमी ने एक चम्मच सूप चखा। उसने सोचते हुए कहा, ''हूँ, मुझे लगता है सूप थोड़ा पतला हो गया है। अगर थोड़ा आटा या पिसा हुआ जौ होता तो बड़ा अच्छा होता।'' औरत ने कहा, ''बस इतना ही? रुको, मेरे पास मेरी रसोई में कुछ जौ का आटा अवश्य कहीं रखा है। मैं अभी लाती हूँ।'' कहकर औरत गई और मुट्ठी भर आटा ले आई। उसे उसने बर्तन में उँड़ेल दिया और वह उसे चलाने लगा।

''यह सूप बढ़िया बन रहा है। लेकिन मैं ज़रा जानना चाह रहा था कि अगर कुछेक आलू होते तो इसे और अच्छा बना देते!'' उसने टिप्पणी करते हुए कहा। ''मुझे लगता है ज़रूर उस टोकरी में मिल सकते हैं, मुझे देखने दो!'' उसने कहा।

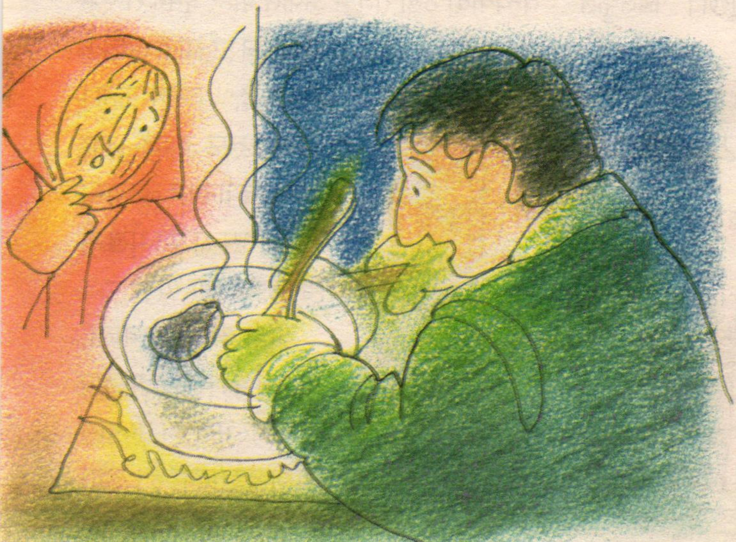

वह कुछ आलू और एक टमाटर के साथ वापस आई। ''ये बढ़िया है! सूप का स्वाद अब पहले से कहीं बेहतर होगा,'' यात्री ने प्रसन्नता से कहा। उसने आलू व टमाटर काटे और टुकड़ों को सूप में मिला दिया और उसे घुमाने लगा।

उसने सूप दुबारा चखा। ''तुम्हें पता है पत्थर सूप की क्या खासियत है? इसका स्वाद बेहतरीन होता है जब आप इसमें

फ़ारस की एक कहानी पढ़ें hindi.chandamama.com पर

कुछ एक टुकड़े माँस के मिला देते हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपके घर में माँस है, इसलिए कोई बात नहीं!'' उसने निराशा भरी गहरी साँस ली। लेकिन बूढ़ी औरत अपनी रसोई में दुबारा गई और अल्मारी के सारे डिब्बे टटोले। जब उसे नमक लगे माँस का मर्तबान (जार) मिला वह खुशी से चिल्लाई। अपने हाथों में मर्तबान लिए वह जल्द वापस आई। यात्री ने कुछ टुकड़े निकाले और बर्तन में डाल दिए।

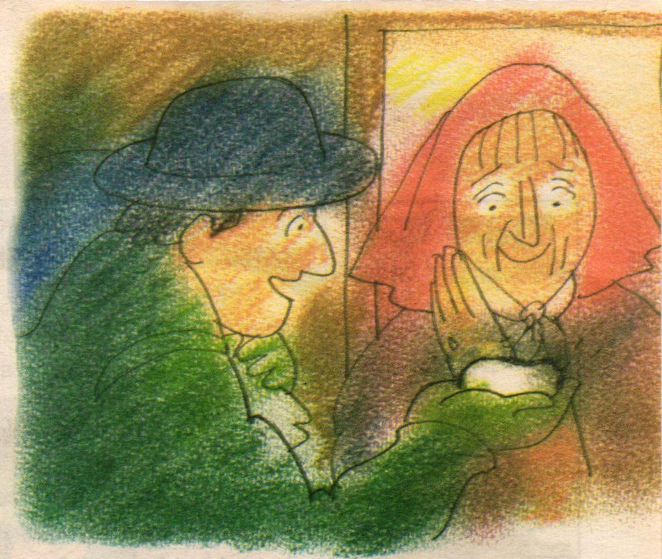

''तुम्हारा भला हो, यह सूप सबसे बढ़िया बनने जा रहा है कि शायद ही तुमने कभी पीया हो!''

''क्या तुम्हें लगता है कुछ प्याज़ के टुकड़े सूप को और भी अच्छा बना देंगे?'' यात्री ने उत्तर दिया, ''अगर हमने वह डाला तब सूप स्वयं राजा के लायक बन जाएगा!'' उसकी आँखें फैल गईं। ''सच? तब मैं वह भी ले आऊँगी!'' उसने कहा और एक प्याज़ लिए एक पल में वापस आ गई। उसने प्याज़ काटा व उसे सूप में मिला दिया। सूप अच्छी तरह उबल रहा था और उसने बर्तन को एक तश्तरी से ढक दिया। उसने चारों तरफ देखा लेकिन औरत कहीं दिखाई नहीं दी। तभी तश्तरियों की आवाज़ आई तथा औरत दो तश्तरियों में एक-एक ब्रेड लिए वापस आई। ''मैंने सोचा ब्रेड की एक स्लाइस इस मज़ेदार पत्थर सूप के साथ ठीक रहेगी!'' औरत ने कहा। आदमी मुस्कुराया। ''बिलकुल, ये ठीक रहेगी!'' वह बोला।

सूप तैयार था। औरत ने अपनी ज़िंदगी में इतना स्वादिष्ट सूप कभी नहीं पीया था! उन दोनों ने चमचे भर सूप अपने कटोरों में डाले और खाने लगे जब तक कि बर्तन में पत्थर बाकी नहीं रह गया। ''यह पत्थर निश्चय ही जादुई है,'' बूढ़ी औरत ने अपनी चम्मच से उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा। उस रात, यात्री ने औरत के घर में ही विश्राम किया।

सुबह अपनी यात्रा शुरू करने से पहले, उसने जादुई पत्थर निकाला। ''मुझे पत्थर सूप बनाने के लिए बर्तन देने के लिए धन्यवाद। यह पत्थर आप रख सकती हैं। यह आप के लिए एक छोटा सा उपहार है।'' औरत बहुत ही आश्चर्यचकित हुई। ''लेकिन पत्थर सूप बनाने के लिए क्या तुम्हें इसकी आवश्यकता नहीं?'' उसने पूछा। लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया। वह रहस्यमय तरीके से मुस्कुराया और उसे अलविदा कहा।

- रमा रमेश द्वारा पुनकर्थित

नई सदस्यता और सदस्यता नवीनीकरण करें hindi.chandamama.com पर

जातक कथा
चन्दामामा द्वारा पुनर्कथित
एक संदिग्ध नाम-२
बड़ी उत्सुकता से राजा जंगल में जाते हैं।
हे महात्मन्, कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें!
हूँऽऽ...क्या चाहते हो तुम संपत्ति के लिए एक मंत्र या एक पत्नी?
श्रीमन्, आप इतनी कठोरता से क्यों बोल रहे हैं?
मेरे पास राजाओं और उनकी सनक के लिए धैर्य नहीं है।
निश्चय ही मैं यहाँ एक पत्नी के लिए आया हूँ।
पुत्री, तुम क्या सोचती हो?
पहले राजा को मेरे नाम का अनुमान लगाने दीजिए!
ठीक है!
लेकिन यह तो कुछ भी हो सकता है!
तुम्हारी अपनी सनक है, हमारी अपनी।

राजा ने अपने विद्वानों के साथ विचार विमर्श किया और एक सूची के साथ लौटे।
हे महात्मन् मैं चुनौती के लिए तैयार हूँ!
वाकई!
बोले गए प्रत्येक नाम पर महात्मा हँसे और अपना सिर हिलाते रहे।
अधीरा!
चंद्रवदना!
सुन्दरी!
राजा ने अनुमान लगाने की कोशिश में कई दिन बिता दिए।
मैं देख सकती हूँ कि उनका प्रेम मेरे प्रति सच्चा है।
देवी, मुझे शक है कि मैं कभी आपका हाथ पा भी सकूँगा!
आपने अभी मेरा नाम लिया!
क्या! 'आशंका' यानी 'शक' हो सकता है?
तुमने अपने प्रयासों से मेरी पुत्री का हाथ जीत लिया!
बेशक, श्रीमन्!
समाप्त

तेज़ फार्मूला

इस महीने का प्रश्नः

विद्यालय के वार्षिक समारोह के अवसर पर सभी मेहमानों एवं स्टाफ से सदस्यों को उनके सम्मान में गुलदस्ता भेंट करने का निर्णय लिया गया। हर एक गुलदस्ता १७ गुलाब, १३ सूरजमुखी तथा ९ कमलिनी का बना है। इनकी कीमत २ रुपए प्रति गुलाब, ३ रुपए प्रति सूरजमुखी तथा ४ रुपए प्रति कमलिनी है। स्टाफ एवं मेहमानों का विवरण इस प्रकार हैः १ प्रधानाचार्य, २ उपप्रधानाचार्य, १ मुख्य अतिथि, १ चेयर पर्सन, ६२ माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक और ४० प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक। फूलवाले ने विद्यालय को पूरी कीमत पर १० प्रतिशत की छूट दी। विद्यालय को कुल कितनी धनराशि चुकानी है?

बिना किसी यंत्र की सहायता के इस राशि की गणना का तीव्रतम सूत्र बताओ।

नोटः इसका हल नवम्बर २००९ के अंक में प्रकाशित होगा।

सबसे तेज़ फार्मूला देने वाले को ५००/- रुपये का इनाम मिलेगा। एक से ज़्यादा सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपये दिए जाएँगे। अपने प्रवेश फार्म ३० सितम्बर के पहले इस पते पर भेजें :

संपादक, चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, २/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेन रोड, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१. या ई-मेल करेंः contests@chandamama.com

---

हमें जुलाई महीने के सवाल के सारी प्रविष्टियाँ तीव्रतम तरीका को अपनाये बिना प्राप्त है। इसलिए किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। यहाँ प्रस्तुत है इसको हल करने का तीव्रतम तरीका :

स्टेप १ः संख्या ज्यों की त्यों लिखिए और संख्या तथा १०० के बीच का अंतर इसमें जोड़िए, वह हैः १०७+(१०७-१००)=१०७+७ =११४. यह आपके उत्तर का एल एच एस है।

स्टेप २ः जो अंतर आया उसका वर्ग आपके उत्तर के लिए लिखिए, वह हैः $(०७)^२$=४९

अब आपका उत्तर होता है ११४४९. यह १०७ का वर्ग है।

प्रश्न में आप से विशेष तौर पर ३० दिन हेतु धनराशि की गणना पूछी गई है।

१०७ लोगों के रहने का साप्ताहिक खर्च = ११४४९

१०७ लोगों के रहने का प्रति दिन का खर्च = ११४४९/७.

१०७ लोगों के रहने का ३० दिन का खर्च = (११४४९/७) X ३० = १६३५.६ X ३०= १६३५६ X ३ = ४९०६८

क्या कहीं भुने टिड्डे खाए जाते हैं? जानें hindi.chandamama.com पर

हुआ। प्रमुख वानर वीर गन्धमादन, नल, मैन्द, गज, जाम्बवन्त, सुग्रीव, ऋषभ, अंगद, द्विविद आदि इन्द्रजित के छोड़े हुए, बाणों से घायल हो गये।

कुछ मूर्छित हो गये, जो मारे गये वे तो असंख्य ही थे। इन्द्रजित आकाश में कहाँ था, यह वानर न जान सके।

इन्द्रजित द्वारा बरसाये गये बाण राम लक्ष्मण पर भी गिरे। राम ने लक्ष्मण से कहा, ''इस इन्द्रजित से कैसे युद्ध किया जाये, जो दिखाई भी नहीं देता है। उसकी चोट के कारण सारी वानर सेना मूर्छित पड़ी है। यदि हम यह दिखायें कि हम भी मूर्छित हैं, तो इन्द्रजित सन्तुष्ट होकर चला जायेगा।''

राम लक्ष्मण को भी मूर्छित देख, इन्द्रजित सन्तुष्ट होकर लंका वापस चला गया।

राम लक्ष्मण को मूर्छित अवस्था में देखकर वानर सेना भी चिन्तित हो उठी। सुग्रीव, नील, अंगद, जाम्बवन्त सचमुच सुध-बुध खोये बेहोशी में थे।

राम लक्ष्मण को देखकर विभीषण ने चिन्तित वानरों से कहा, ''तुम फिक्र न करो, राम, लक्ष्मण मूर्छित नहीं हैं, यूँही अपने को मूर्छित दिखा रहे हैं।''

रात हो गई थी। अन्धकार था, जो मूर्छित वानर सोए हुए थे, कहा न जा सकता था, उनमें कौन मूर्छित थे और कौन मृत। इसलिए हनुमान और विभीषण चिराग लेकर उनको खोजने लगे।

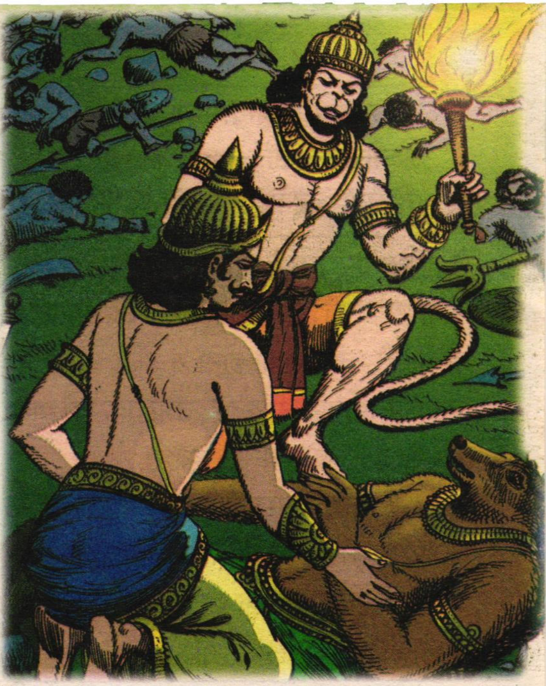

इन्द्रजित ने उस दिन शाम को पाँच घड़ी में सड़सठ करोड़ वानरों को मार दिया था। जो गिर गये थे, उनमें सुग्रीव, अंगद, नील, शरभ आदि कितने ही दिखाई दिये। वे जाम्बवन्त को खोजने लगे। महावृद्ध जाम्बवन्त उनको जीवित दिखाई दिए।

विभीषण ने जाम्बवन्त के पास आकर कहा, ''बाबा, जीवित तो हो न?''

जाम्बवन्त ने दबी आवाज में कहा, ''क्या यह विभीषण ही बोल रहा है? मुझे आँखों से दिखाई नहीं दे रहा है। क्या हनुमान ठीक है?''

''बाबा, तुम सुग्रीव, अंगद, राम, लक्ष्मण के बारे में न पूछकर हनुमान के बारे में क्यों पूछ रहे हो?'' विभीषण ने पूछा।

''पूछ रहे हो कि हनुमान के बारे में क्यों पूछा

मगर का सामना करके क्या गजेन्द्र बचा? देखें hindi.chandamama.com

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी जुलाई २००९ के उत्तर : B
विजेता : दिनेश चन्द्र भाटी, सिरोही

है? बताता हूँ। सुनो, हनुमान यदि है, तो वानर सेना मरकर भी है। यदि हनुमान न रहा और वानर सेना रही, तो उसका होना न होना बराबर है। जब तक हनुमान जीवित है, तभी तक मुझे प्राणों से मोह है।'' जाम्बवन्त ने कहा।

हनुमान ने, जो ये बातें सुन रहा था, जाम्बवन्त के पास आकर, उसके पैरों पर पड़कर नमस्कार किया। हनुमान का स्वर सुनते ही जाम्बवन्त की जान में जान आयी।

''बेटा, हनुमान इधर आओ। इन वानरों की रक्षा का भार अब तुम पर ही है। यह काम तुम्हारे सिवाय कोई नहीं कर सकता। तुम्हें समुद्र पार करके हिमालय तक जाना होगा। वहाँ सबसे ऊँचे शिखर ऋषभ और कैलास हैं। उन दोनों के बीच में औषधि पर्वत है। उसके शिखर पर कान्तिवाली चार दिव्य औषधियाँ हैं। उनका नाम है विशल्य-करनी, संधानकरनी, मृतसंजीविनी, सौवर्णकरनी

चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी

अतिकाय की माँ कौन थी?

(a) सिंहिका (b) मंदोदरी (c) धान्यमालिनी

आप अपना उत्तर CRQ <a/b/c> <space> <Name, Lang, Place> लिखकर 54646 पर SMS कर दो। बेतरतीब चुने एक भाग्यशली विजेता को चन्दामामा का 'कॉमिक काम्बो पैक' दिया जाएगा।

इन चारों औषधियों को लेकर बिना विलम्ब किये जल्दी आओ।''

जाम्बवन्त ने हनुमान से कहा कि इन औषधियों से वानरों को जिलाया जा सकता है।

तुरंत हनुमान रात के समय एक पर्वत शिखर पर खड़े होकर शरीर बढ़ाकर जोर से चिल्लाया ताकि राक्षस डर डरा जायें। फिर वह आकाश में उड़ा।

विष्णु पुराण की कथाएँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

स्वीडन की लोक कथा

स्वादिष्ट पत्थर सूप

एक बार एक थका हुआ यात्री एक गाँव से गुज़र रहा था। रात का समय था और उसे सन्देह हो रहा था कि किसी एक घर में उसे आश्रय मिल पाएगा। उसने अपनी आँखें बंद कीं और मन में सोचा, ''कितना अच्छा हो कि गर्मागर्म सूप के साथ एक गर्म आग के सामने बैठने को मिल जाए।'' कुछ दूरी पर उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी और इस आशा में कि उसे कुछ खाने को मिल जाएगा, वह उस तरफ चल पड़ा।

उसने दरवाज़ा खटखटाया और एक बूढ़ी औरत ने दरवाज़ा खोल कर अजनबी आँखों से उसे देखा। ''क्या आप मुझे रात भर रुकने के लिए जगह दे देंगी?'' यात्री ने पूछा। ''बिलकुल नहीं। यह रास्ते की सराय नहीं है!'' उसने गुस्से से कहा। ''मैंने दिन भर से कुछ खाया भी नहीं है। अगर खाने के लिए थोड़ा कुछ मिल जाए तो मैं आपका बड़ा आभारी रहूँगा!'' यात्री ने कहा। ''मेरे पास स्वयं खाने के लिए भोजन नहीं है, उस यात्री के लिए क्या होगा जो मेरा दरवाज़ा खटखटाता है,'' वह बुदबुदाई।

बूढ़ी औरत धाड़ से दरवाज़ा बंद कर देती परंतु यात्री इतना आग्रही था कि आखिरकार औरत को दया आ गयी और उसने उसे घर के अंदर ले लिया। ''लेकिन ध्यान रहे, मुझसे उम्मीद न करना कि साथ में खाना भी दूँगी।'' ''आपका धन्यवाद! ठंडी रात में अकेले बाहर घूमने से एक गर्म ज़मीन पर सोना अधिक अच्छा है,'' उसने कहा। उसने करवट बदली और मुड़कर ज़मीन पर लेट गया क्योंकि उसका पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा था।

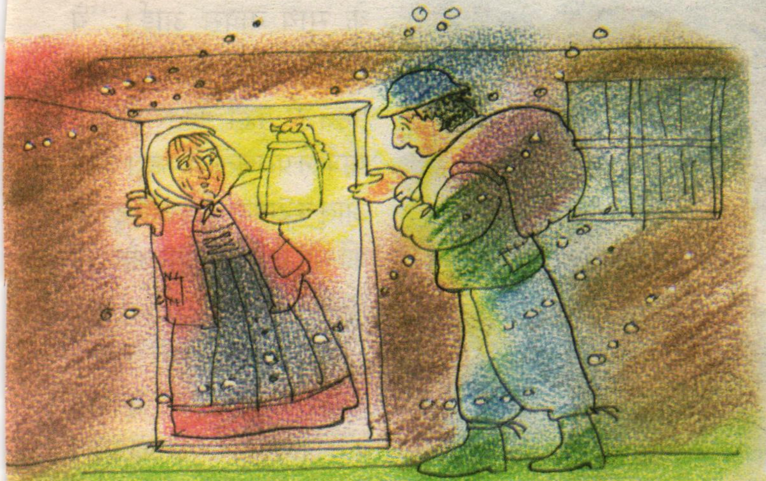

यात्री औरत से बोला, ''ये शर्म की बात है कि हम इस प्रकार भूखे हैं। मेरे पास एक जादुई पत्थर है। अगर आप मुझे वह स्टील का

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त SMS hindi.chandamama.com से

बर्तन यहाँ लाकर दे सकती हैं, तो मैं अपने लिए स्वादिष्ट पत्थर सूप बना सकता हूँ!'' बूढ़ी औरत ने उसे अविश्वास से घूरा। ''क्या कहा तुमने, पत्थर सूप?'' उसने पूछा। ''हाँ, बिलकुल!'' यात्री ने घमंड से कहा।

''आप बहुत सी चीज़ें सीखते हैं, जब आप दूर-दराज़ यात्रा करते हैं!'' उसने कहा। उसने अपना थैला खोला और सावधानी से कागज़ में लपेटा हुआ एक पत्थर निकाला।

औरत ने सोचा, 'मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत सी चीज़ें देखी और सुनी हैं... लेकिन पत्थर सूप? कभी नहीं! पड़ोसन का मुँह खुला का खुला रह जाएगा जब मैं उसे इसके बारे में बताऊँगी!' वह रसोई की तरफ लपकी और स्टील का बर्तन ले आई। यात्री ने बर्तन आग पर रखा, उसमें पानी भर कर आराम से पत्थर बर्तन में छोड़ दिया। वह लकड़ी के चमचे को बर्तन में घुमाने लगा। उसे पास से देखने के लिए औरत ज़मीन पर बैठ गई।

कुछ समय बाद, आदमी ने एक चम्मच सूप चखा। उसने सोचते हुए कहा, ''हूँ, मुझे लगता है सूप थोड़ा पतला हो गया है। अगर थोड़ा आटा या पिसा हुआ जौ होता तो बड़ा अच्छा होता।'' औरत ने कहा, ''बस इतना ही? रुको, मेरे पास मेरी रसोई में कुछ जौ का आटा अवश्य कहीं रखा है। मैं अभी लाती हूँ।'' कहकर औरत गई और मुट्ठी भर आटा ले आई। उसे उसने बर्तन में उँड़ेल दिया और वह उसे चलाने लगा।

''यह सूप बढ़िया बन रहा है। लेकिन मैं ज़रा जानना चाह रहा था कि अगर कुछेक आलू होते तो इसे और अच्छा बना देते!'' उसने टिप्पणी करते हुए कहा। ''मुझे लगता है ज़रूर उस टोकरी में मिल सकते हैं, मुझे देखने दो!'' उसने कहा।

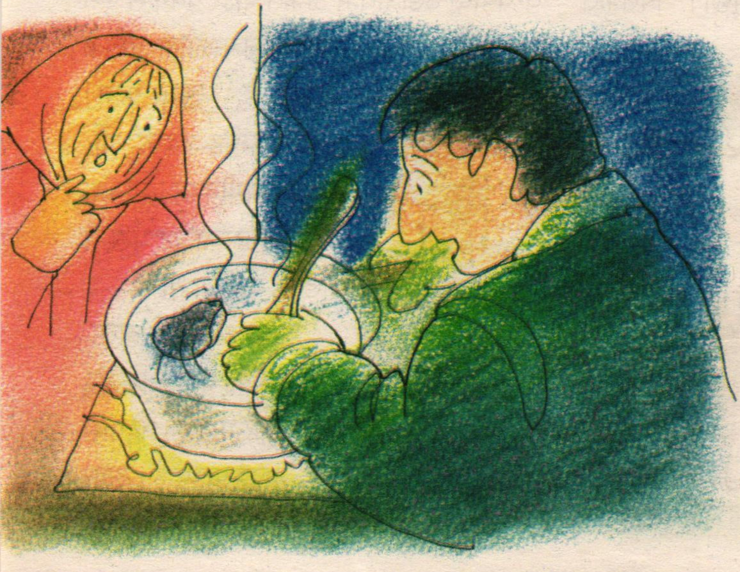

वह कुछ आलू और एक टमाटर के साथ वापस आई। ''ये बढ़िया है! सूप का स्वाद अब पहले से कहीं बेहतर होगा,'' यात्री ने प्रसन्नता से कहा। उसने आलू व टमाटर काटे और टुकड़ों को सूप में मिला दिया और उसे घुमाने लगा।

उसने सूप दुबारा चखा। ''तुम्हें पता है पत्थर सूप की क्या खासियत है? इसका स्वाद बेहतरीन होता है जब आप इसमें

फ़ारस की एक कहानी पढ़ें hindi.chandamama.com पर

कुछ एक टुकड़े माँस के मिला देते हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपके घर में माँस है, इसलिए कोई बात नहीं!'' उसने निराशा भरी गहरी साँस ली। लेकिन बूढ़ी औरत अपनी रसोई में दुबारा गई और अल्मारी के सारे डिब्बे टटोले। जब उसे नमक लगे माँस का मर्तबान (जार) मिला वह खुशी से चिल्लाई। अपने हाथों में मर्तबान लिए वह जल्द वापस आई। यात्री ने कुछ टुकड़े निकाले और बर्तन में डाल दिए।

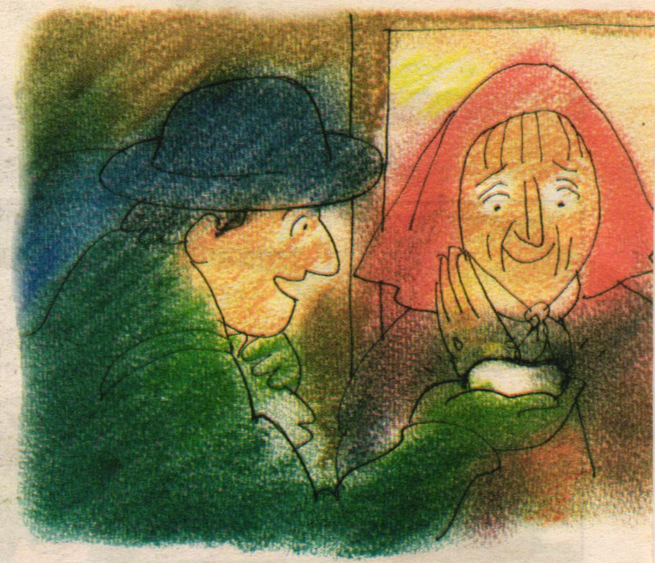

''तुम्हारा भला हो, यह सूप सबसे बढ़िया बनने जा रहा है कि शायद ही तुमने कभी पीया हो!''

''क्या तुम्हें लगता है कुछ प्याज़ के टुकड़े सूप को और भी अच्छा बना देंगे?'' यात्री ने उत्तर दिया, ''अगर हमने वह डाला तब सूप स्वयं राजा के लायक बन जाएगा!'' उसकी आँखें फैल गईं। ''सच? तब मैं वह भी ले आऊँगी!'' उसने कहा और एक प्याज़ लिए एक पल में वापस आ गई। उसने प्याज़ काटा व उसे सूप में मिला दिया। सूप अच्छी तरह उबल रहा था और उसने बर्तन को एक तश्तरी से ढक दिया। उसने चारों तरफ देखा लेकिन औरत कहीं दिखाई नहीं दी। तभी तश्तरियों की आवाज़ आई तथा औरत दो तश्तरियों में एक-एक ब्रेड लिए वापस आई। ''मैंने सोचा ब्रेड की एक स्लाइस इस मज़ेदार पत्थर सूप के साथ ठीक रहेगी!'' औरत ने कहा। आदमी मुस्कुराया। ''बिलकुल, ये ठीक रहेगी!'' वह बोला।

सूप तैयार था। औरत ने अपनी ज़िंदगी में इतना स्वादिष्ट सूप कभी नहीं पीया था! उन दोनों ने चमचे भर सूप अपने कटोरों में डाले और खाने लगे जब तक कि बर्तन में पत्थर बाकी नहीं रह गया। ''यह पत्थर निश्चय ही जादुई है,'' बूढ़ी औरत ने अपनी चम्मच से उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा। उस रात, यात्री ने औरत के घर में ही विश्राम किया।

सुबह अपनी यात्रा शुरू करने से पहले, उसने जादुई पत्थर निकाला। ''मुझे पत्थर सूप बनाने के लिए बर्तन देने के लिए धन्यवाद। यह पत्थर आप रख सकती हैं। यह आप के लिए एक छोटा सा उपहार है।'' औरत बहुत ही आश्चर्यचकित हुई। ''लेकिन पत्थर सूप बनाने के लिए क्या तुम्हें इसकी आवश्यकता नहीं?'' उसने पूछा। लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया। वह रहस्यमय तरीके से मुस्कुराया और उसे अलविदा कहा।

- रमा रमेश द्वारा पुनकर्थित

नई सदस्यता और सदस्यता नवीनीकरण करें hindi.chandamama.com पर

जातक कथा
चन्दामामा द्वारा पुनर्कथित
एक संदिग्ध नाम-२
बड़ी उत्सुकता से राजा जंगल में जाते हैं।
हे महात्मन्, कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें!
हूँऽऽ...क्या चाहते हो तुम संपत्ति के लिए एक मंत्र या एक पत्नी?
श्रीमन्, आप इतनी कठोरता से क्यों बोल रहे हैं?
मेरे पास राजाओं और उनकी सनक के लिए धैर्य नहीं है।
निश्चय ही मैं यहाँ एक पत्नी के लिए आया हूँ।
पुत्री, तुम क्या सोचती हो?
पहले राजा को मेरे नाम का अनुमान लगाने दीजिए!
ठीक है!
लेकिन यह तो कुछ भी हो सकता है!
तुम्हारी अपनी सनक है, हमारी अपनी।

राजा ने अपने विद्वानों के साथ विचार विमर्श किया और एक सूची के साथ लौटे।
हे महात्मन् मैं चुनौती के लिए तैयार हूँ!
वाकई!
बोले गए प्रत्येक नाम पर महात्मा हँसे और अपना सिर हिलाते रहे।
अधीरा!
चंद्रवदना!
सुन्दरी!
राजा ने अनुमान लगाने की कोशिश में कई दिन बिता दिए।
मैं देख सकती हूँ कि उनका प्रेम मेरे प्रति सच्चा है।
देवी, मुझे शक है कि मैं कभी आपका हाथ पा भी सकूँगा!
आपने अभी मेरा नाम लिया!
क्या! 'आशंका' यानी 'शक' हो सकता है?
तुमने अपने प्रयासों से मेरी पुत्री का हाथ जीत लिया!
बेशक, श्रीमन्!
समाप्त
MAHE...

तेज़ फार्मूला

इस महीने का प्रश्नः

विद्यालय के वार्षिक समारोह के अवसर पर सभी मेहमानों एवं स्टाफ से सदस्यों को उनके सम्मान में गुलदस्ता भेंट करने का निर्णय लिया गया। हर एक गुलदस्ता १७ गुलाब, १३ सूरजमुखी तथा ९ कमलिनी का बना है। इनकी कीमत २ रुपए प्रति गुलाब, ३ रुपए प्रति सूरजमुखी तथा ४ रुपए प्रति कमलिनी है। स्टाफ एवं मेहमानों का विवरण इस प्रकार हैः १ प्रधानाचार्य, २ उपप्रधानाचार्य, १ मुख्य अतिथि, १ चेयर पर्सन, ६२ माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक और ४० प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक। फूलवाले ने विद्यालय को पूरी कीमत पर १० प्रतिशत की छूट दी। विद्यालय को कुल कितनी धनराशि चुकानी है?

बिना किसी यंत्र की सहायता के इस राशि की गणना का तीव्रतम सूत्र बताओ।

नोटः इसका हल नवम्बर २००९ के अंक में प्रकाशित होगा।

सबसे तेज़ फार्मूला देने वाले को ५००/- रुपये का इनाम मिलेगा। एक से ज़्यादा सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपये दिए जाएँगे।

अपने प्रवेश फार्म ३० सितम्बर के पहले इस पते पर भेजें :

संपादक, चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, २/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेन रोड, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१. या ई-मेल करेंः contests@chandamama.com

---

हमें जुलाई महीने के सवाल के सारी प्रविष्टियाँ तीव्रतम तरीका को अपनाये बिना प्राप्त है। इसलिए किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। यहाँ प्रस्तुत है इसको हल करने का तीव्रतम तरीका :

स्टेप १ः संख्या ज्यों की त्यों लिखिए और संख्या तथा १०० के बीच का अंतर इसमें जोड़िए, वह हैः १०७+(१०७-१००)=१०७+७ =११४. यह आपके उत्तर का एल एच एस है।

स्टेप २ः जो अंतर आया उसका वर्ग आपके उत्तर के लिए लिखिए, वह हैः (०७)²=४९

अब आपका उत्तर होता है ११४४९. यह १०७ का वर्ग है।

प्रश्न में आप से विशेष तौर पर ३० दिन हेतु धनराशि की गणना पूछी गई है।

१०७ लोगों के रहने का साप्ताहिक खर्च = ११४४९

१०७ लोगों के रहने का प्रति दिन का खर्च = ११४४९/७.

१०७ लोगों के रहने का ३० दिन का खर्च = (११४४९/७) x ३० = १६३५.६ x ३०= १६३५६ x ३ = ४९०६८

क्या कहीं भुने टिड्डे खाए जाते हैं? जानें hindi.chandamama.com पर

गोस्ट रेस्तराँ

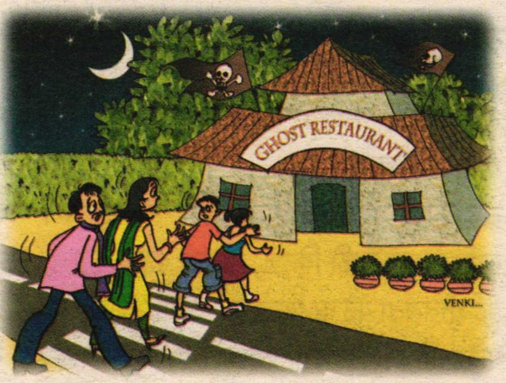

इसी नवंबर महीने से कोलकाता से कुछ किलो-मीटर दूर, नेशनल हाईवे-६ पर स्थित इस रेस्तराँ को आप देख सकते हैं। पर जाले लगे हुए भोजन-कक्ष तक एक कंकाल की सुरक्षा में चलने पर मत डरिएगा ! एक स्वागत भरी मुस्कान के साथ भूत ऑर्डर लेंगे और पिशाच आपके साथ बैठने के लिए दीवारों पर लगी तस्वीरों से उतर आएँगे। इस भोजनालय का निर्माण विश्व प्रसिद्ध जादूगर पी सी सरकार (जूनियर) द्वारा किया गया है। उजाड़-से दिखने वाले इस घर को जिसके हाते में कब्र हैं, भूतहे चित्र और छोटी खिड़कियाँ हैं, बिखरे हुए प्रकाश, लेज़र किरणों तथा सजीव मॉडल से प्रभावपूर्ण बनाया जाएगा।

पकड़ौउवा विवाह

यह भारत की अनेकता में एकता के बारे में हम जो कहते हैं, वह व्यर्थ नहीं है। जहाँ दहेज जैसी बुरी प्रथा है, वहाँ एक ऐसी प्रथा भी साथ-साथ व्याप्त है जिसमें दहेज माँगनेवाले दूल्हे का वास्तव में बलपूर्वक विवाह कराया जा सकता है-चाहे वह इसे पसंद करे या न करे! यह प्रथा ''पकड़ौउवा विवाह'' कहलाती है और बिहार में अभी भी प्रचलित है। इस प्रथा के अनुसार अगर दुल्हन और उसके परिवार के सदस्यों को दूल्हा जँच जाता है, लेकिन दहेज की माँग बहुत अधिक दिखाई देती है तो ऐसे में वे उसे ''जीतने'' के लिए यह फिल्मी तकनीक प्रयोग में ला सकते हैं। बदमाशों के एक दल को खतरे से अनजान दूल्हे पर छोड़ दिया जाता है और उसका अपहरण कर दुल्हन के परिवार को सौंप दिया जाता है। तत्पश्चात् विवाह विधि-विधान से संपन्न होता है! अगर दूल्हा राज़ी नहीं है तो भी विवाह में उस की सुनवाई न के बराबर है !

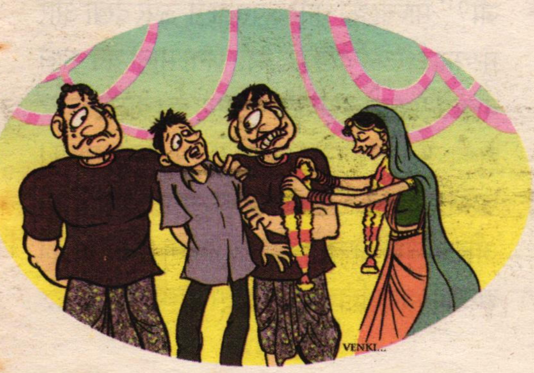

hindi.chandamama.com पर पढ़ें मज़ेदार कॉमिक्स

कमल स्त्री

सन् १५६१, मालवा की राजधानी, मान्डू का नगर, रीवा कुन्ड।

वह क्रीड़ा भवन के अंतिम छोर पर बैठी थी। साँझ के सूरज की किरणें, गुम्बदों के नीचे बची हुई शीतलता को दूर करते हुए, अभी भी फर्श पर पहुँच रही थीं। उसने पत्थरों की चिकनी चमकदार सतह पर कोमलता से अपना हाथ घुमाया। ये विशेष रूप से तराशे गए थे, जिससे कि उसके कोमल गोरे हाथ को उनकी खुरदरी सतह से चोट न पहुँचे।

उससे बहुत नीचे, सुदूर रुपहले व सुनहरे घाव की एक रेखा, शाम के सूर्य में चमक रही थी मानो उस पर हीरे तैर रहे हों। नर्मदा, खूबसूरत नदी नर्मदा-या रीवा, जो वह इसे पुकारना पसंद करती थी। धरती की संपदा, वरदानी देवी जिसने मान्डू को जीवन प्रदान किया। इस छोटे किन्तु समृद्ध साम्राज्य को जिन्होंने बनाया उन नर और नारियों की यही एकमात्र सूत्र थी। किले की दीवारों से नीचे बहती हुई रंग बिरंगी ज़िंदगी को निहारते, स्वयं हँसते व मुस्कुराते, उसने क्रीड़ाभवन में कितने ही घंटे बिता दिए!

कहीं बहुत दूर से चीखने और चिल्लाने की हल्की सी आवाज़ें उस तक पहुँची। या यह मात्र उसकी कल्पना थी? इन दिनों, ऐसा लगता था कि वह सच में किन्हीं दो के बीच का अंतर नहीं बता सकती थी। अधिक और अधिक वह बीती हुई चीज़ों की यादों में डूबती गई - क्या यह हाल ही में हुई घटनाओं का एक परिणाम था?

किसी ने सावधानी से उसे पुकारा। ''महारानी जी?'' माल्वा की रानी रूपमती ने ऊपर देखा और मुस्कुराई। उन्हें देख कर ऐसा लगा मानो घने काले बादलों से सूर्य का प्रकाश फूट पड़ा हो। दासी आकर झुकी और रत्नजड़ित प्याले में एक पेय थमाया। उसने वह ले लिया, इसकी घूमती हुई गहराई में झाँका। और हमेशा की तरह, वास्तविकता घुँघरुओं की झनकार और खिलखिलाहट में विलीन हो गई...

***

सारी दुनिया के रुचिकर समाचार पढ़ें hindi.chandamama.com पर

सन् १५५६, सीमान्त मान्डू, फलों का उद्यान।

मियाँ बायेज़िद बाज़ बहादुर अभी ही अपने शहर के झगड़े को निपटा कर एक पूरी तरह थकाने वाले सफर से लौटा था- और यह उसे कतई ज़रूरी नहीं लगा था। वह एक जवान आदमी था जो समझता था कि मालवा के सुल्तान के तौर पर काम करना उसका फर्ज़ था, लेकिन ये किसने कहा कि उसे इसमें मज़े लेने चाहिए? उसे तो एक छोटी सी रियासत की हद में आरामदेह, धीमी मस्त चाल की ज़िन्दगी की आरजू थी जिसके वह सालों से मज़े ले रहा थाः संगीत, किताबें और कलाएँ, अच्छा खाना, कपड़े, जबकि उसकी रियासत के सूबेदारों ने फर्ज़ की अदायगी पर ध्यान दिया। अक्सर उसे अपने रेशम के गद्दों से उठना पड़ता और उसके लोग सब ठीक ठाक हैं यह तय करना पड़ता था- हालांकि वह बहुत ईमानदार था और मालवा एक खुशहाल ज़मीन रहे इसकी अच्छी तरह परवाह करता था, फिर भी यह उसे बहुत ही मेहनत का काम लगता था। सूरज उसके पगड़ी बँधे हुए सर पर दहक रहा था, और यहाँ तक कि उस के घोड़े भी इसे एक कामकाजी दिन के बाद विश्राम के लिए तैयार थे - ...तभी बहुत ही खूबसूरत अनजानी जनानी आवाज़ ने उसके कानों पर हमला किया।

अब तक जो उसने खूबसूरत चीज़ें देखीं सब उसे जुड़ती हुई दिखने लगीं- खिले हुए गुलाब, चाँद की दूधिया चाँदनी, रेशम की मखमली चमक- लगभग पूरी बेहोशी के आलम में मीठी

धुन का पीछा करते हुए वह अपने घोड़े को एक मन्द चाल में चलाने लगा।

एक बाँका छैल छबीला गर्वीला,
कोई न देखे रूप ये न्यारा-
बने कफ़न तेरा रखवाला,
तेरा मान जब संकट में हो,
ताज से मौत हो कहीं प्यारा!

आह, वह दुख भरी गाथा चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की कहानी गाई गई। यह उसके दिल के दर्द और कल्पनाओं को झकझोरने में कभी नाकामयाब नहीं रहा।

उसका अपना अनुभव था कि जिनकी आवाज़ खूबसूरत होती है, उनमें से बहुत कम ही शारीरिक सुन्दरता के मामले में भाग्यवान होते हैं। तब, आवाज़ की मालकिन कैसी दिखती है, यह न जानते हुए भी, बाज़ बहादुर ने इस आवाज़

गरुड़ जैसी और कॉमिक्स? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

द्वारा लाई गई बड़ी सेनाओं को ध्यान में रखते हुए, एक बहुत कम संख्या थी। उन्होंने उसे पूरी तरह पराजित कर दिया और अब तो उन्हें जीत का खिताब मिल गया होगा, उसने घृणापूर्वक सोचा। वह, बाज़ बहादुर, मालवा का सुल्तान, हमले की तैयारियों के समय अपनी कला और संगीत के साथ व्यस्त था। अब, उसके देश ने मौत से मूल्य चुकाया।

वही उस की रानी, प्रिय रूपमती ने- जिसकी सुंदरता के किस्से आदम खान ने सुने थे, उसने कहा।

दर्द की कराहट के साथ अपने घाव पोंछते हुए उसने सोचा, यह सच में हुआ होगा। उनका विवाह पूरे देश में चर्चित था, इसलिए क्योंकि यह क्रांतिकारी था। बाग की गायिका मान्डू के एक छोटे लेकिन सम्मानित परिवार की राजपूत लड़की में बदल गई। रूपमती ने जैसे ही उसे देखा, वह उसके प्यार में पड़ गई।

उनकी जिंदगियाँ इतनी सर्वगुण संपन्न थीं कि वह डरता था कि उनको किसी की बुरी नज़र न लगे। वे उसे कमल जैसी स्त्री बुलाने लगे। उसने उसके लिए रीवा कुंड और रानी क्रीड़ास्थल बनवाया- उसे नर्मदा नदी से प्रेम था। और इसे वह हर समय अपने कक्ष से देखना चाहती थी। उनका जीवन खुशियों और प्रेम से भरा, अविनाशी...

का सम्मान करने का निर्णय लिया।

वह झीने से कपड़े से अपने मुँह को थोड़ा ढके हुए तीन-चार अन्य औरतों के साथ बैठी हुई गा रही थी। गुलाब की पत्ती सा उसका रंग था, आँखें माणिक की तरह चमकीली थीं; चेरी की तरह लाल उसके होंठ थे और एक साधारण सी कहानी में अकथनीय सुंदरता एवं सौम्यता जोड़ते हुए गाने के साथ वह धीरे से झूम रही थी। औरों की तुलना में वह खुशनुमा चाँद, आसमान का फरिश्ता लग रही थी।

बाज़ बहादुर उसका नाम, घर-परिवार या जिंदगी कुछ नहीं जानता था--लेकिन वह जान गया कि यह उसकी पत्नी हो सकती थी।

***

२९ मार्च, सन् १५६१, सारंगपुर का युद्ध, मालवा

पेड़ों के बीच से, वह युद्ध का मैदान देख सकता था, बिखरी हुई आदमियों, घोड़ों और हाथियों की लाशें-बादशाह अकबर के विश्वासपात्र सेनापति पीर मुहम्मद खान और आदम खान

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त एसएमएस hindi.chandamama.com से

....और अब तक।

मालवा तबाह हो चुका था- जीत की कोई उम्मीद न थी, बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र मुगलों के लिए था। एक सुल्तान के रूप में- एक साधारण आदमी के रूप में भी, उसकी ज़िंदगी अंतिम पड़ाव पर थी। चित्तौड़गढ़ तक का, मदद के लिए, उसका सफ़र नाकाम रहा। हार, नुकसान और दुखों का पहाड़ उसके सामने मुँह बाये खड़े थे।

रूपमती-सबसे प्रिय। वह क्या सोचेगी, जब उसे पता चलेगा? वह क्या करेगी? उसकी सुरक्षा के लिए उसे वहाँ होना चाहिए, पति और सुल्तान के रूप में उसे बचाना चाहिए- वह नाकाम रहा....

पुरानी स्मृतियों को याद करते हुए उसके होंठ बुदबुदाए।

"क्या तुम्हारा सम्मान अपध्वस्त होना चाहिए था, मुकुट से कहीं अधिक अच्छी मृत्यु है!"

***

३० मार्च, सन् १५६१, रीवा कुंड, मान्डू।

महल में हड़कंप मचगया। उन्होंने कहा, "शत्रु आ गया।" सड़कों पर चिल्लाते हुए नर-नारियों का तूफ़ान छा गया। सुल्तान के न होने के कारण कोई सुरक्षा नहीं थी। थोड़ी सी सेना बड़ी मुश्किल से शाही महल की सुरक्षा व्यवस्था में लगी थी- लेकिन मुगल सैनिक जीत के नशे में चूर थे।

वह नहीं जानती थी कि उसका पति जीवित है या नहीं। पर अब इस से कोई फर्क नहीं पड़ता था। आदम खान रूपमती को बंदी बनाने आ वहाँ चुका था। उसने अपने हाथों के पेय की ओर चिन्तित होकर देखा।

"विदा दो", उसने अपनी विश्वस्त "तुम और मैं, सखी थीं- और मैं प्रसन्न हूँ कि तुम मेरी अंतिम इच्छा पूरी कर सकती हो। केवल एक अफ़सोस है कि मरने से पहले मैं उनके अंतिम दर्शन न कर सकी।" जैसे ही दासी चीखी और दुर्भाग्य पर विलाप करने लगी, रानी ने विष का प्याला पी लिया।

जब आदम खान तूफ़ान की तरह महल के दरवाज़े से दाखिल हुआ, उसे केवल रानी रूपमती का निर्जीव शरीर प्राप्त हुआ। मृत्यु के समय भी उसका मुँह नर्मदा की तरफ़ था- जैसे अपने जीवन में हमेशा किए रहती थी। ***- पवित्रा श्रीनिवासन***

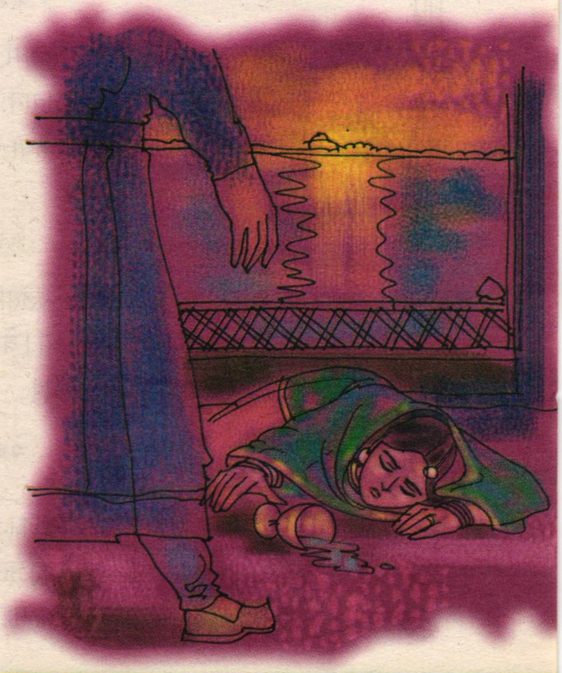

नए संगह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपका प्रतिक्रिया> 54646 पर एसएमएस करें

शाही खाना

हलवे का स्वागत कीजिए

टर्की में हलवा सबसे पुराना मिष्टान्न माना जाता है। तेरहवीं शताब्दी के मेव्लाना जलालुद्दीन-ई-रूमी, जिन्होंने भोजन के बारे में विस्तार से लिखा है, की रचनाओं में इस मिष्टान्न का ज़िक्र मिलता है।

****

टर्की का हलवा सूजी को पका कर और लड्डू का आकार दे कर बनाया जाता था। चीनी के प्रयोग से बहुत पहले, लड्डुओं को शहद या पेकमेज नामक अंगूर के रस से मीठा किया जाता था।

****

पंद्रहवीं शताब्दी में, सुल्तान ''महान सुलेमान'' ने अपने टोपकापी महल को दुबारा बनवाने का आदेश दिया जिसमें 'हल्वाहाने' या 'हलवा घर' को शामिल किया जा सके और जो विभिन्न प्रकार के हलवे बनाये।

****

ग्रीक लोग टहिनि के साथ ''माकेडोनिकोज़ हलवा'' नामक एक प्रकार का हलवा बनाते थे जो ईंट के रूप में बिकता था। वे हलवे पर नींबू का रस और दालचीनी बुरक कर खाना पसंद करते थे।

****

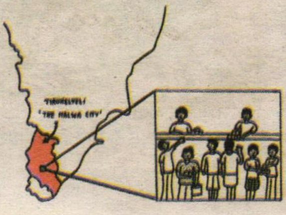

तमिलनाडू का तिरुनेलवेली शहर ''हलवा शहर'' नाम से जाना जाता है। आटे का हलवा, तिरुनेलवेली में तीन सौ वर्षों से प्रवासित मारवाड़ी परिवारों से मशहूर हुआ।

खाने में ऑक्टोपस? और मज़ेदार कहनियाँ hindi.chandamama.com पर

मुगलों ने भारत को सोलहवीं शताब्दी में हलवे से परिचित करवाया। गाजर के हलवे से लेकर सीताफल के हलवे तक, पूर्व के सभी देशों में से भारत में ही हलवे की सब से अनूठी पाक विधियाँ हैं।

****

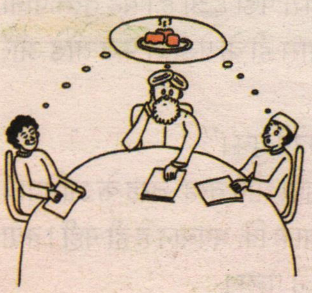

सत्रहवीं शताब्दी में, इस्तनबुल का सभ्य समाज ''हलवा रात्रि भोज'' आयोजित करता था जो बिलकुल एक विचार गोष्ठी के समान होता था। बातचीत के बीच में हलवा एक प्रकार के मध्यांतर के तौर पर परोसा जाता था।

****

अधिकांशतया हम सभी के लिए हलवा भोजन के बाद खाई जाने वाली एक मिठाई है पर ईरान में लोग हलवा पर्शियन फ्लैट ब्रेड लैवाश के बीच में लगा कर मुख्य भोजन के रूप में लेते हैं- बिलकुल एक ''हलवा सैंडविच'' की तरह।

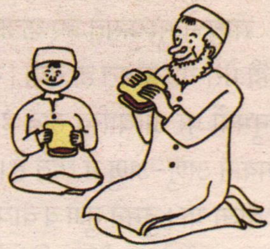

****

बल्गारिया में ''सफेद हलवा'' श्रोव इतवार को हमकाने नामक संस्कार हेतु प्रयोग में लाया जाता है। हलवे के एक टुकड़े को एक लंबे डंडे पर धागे से बाँध दिया जाता है और इसे घुमाया जाता है। बच्चे हलवे को अपने मुँह से पकड़ने की कोशिश करते हैं।

****

हलवे ने लोकोक्ति और मुहावरों में भी अपनी जगह बना ली है। बोस्निया के मुहावरे ''प्रोडाजे से काओ अल्वा'' का मतलब है ''हलवे की तरह बिकता है''। एक ग्रीक कहावत है ''एन्टे रे, हलवा!'' जिसका अनुवाद है, ''दूर जाओ, हलवा!''

चुटकुला भेजें। एसएमएस करें CJOKE <आपका जोक> 54646 पर

संदेह दूर हुआ

सत्यवान एक संदेह को दूर करने के उद्देश्य से तीन महीने पहले गाँव छोड़कर चल पड़ा था। जब वह अरण्य मार्ग से गुज़र रहा था, तब उसने देखा कि एक बूढ़ा साधु बेहोश पड़ा हुआ है। वह तुरंत पानी ले आया, उसके मुँह पर छिड़का, और बाकी पानी उसे पिलाया। पास ही के पेड़ों से फल तोड़े और उसे खिलाया।

फल खा चुकने के बाद साधु ने कहा, ''भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे पुत्र।''

''मैं यही जानने गाँव छोड़कर घूम रहा हूँ कि भगवान कहाँ हैं। इसपर लोग तरह-तरह के अभिप्राय बता रहे हैं। कुछ लोग तो मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। कुछ लोगों का दावा है कि भगवान है ही नहीं। क्या असल में भगवान नामक कोई है? अगर है तो कहाँ है?'' सत्यवान ने पूछा।

साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, ''बहुत बड़ा सवाल पूछा तुमने। इसका समाधान जानने के प्रयत्नों में ही मेरी यह हालत हो गयी। यह अनंत अन्वेषण है। अब रही अभिप्रायों की बात। वे अपने-अपने अनुभवों पर आधारित होते हैं। कल या परसों गिरनेवाला पका पत्ता हूँ मैं। जहाँ तक मेरी बात है, भगवान अणु-अणु में रहते हैं। दूसरे की भलाई चाहने वाले हर व्यक्ति के हृदय में वे रहते हैं। मैं मरने ही वाला था। तुमने मुझे बचाया। तुम मेरे लिए भगवान हो। दूसरे में अच्छाई देखने वाले हर व्यक्ति ने भगवान को देखा होगा। निःसंदेह मैं यह कह सकता हूँ।''

सत्यवान ने साधु को नमस्कार किया। इतने लंबे अर्से के बाद उसके प्रश्न का समाधान मिल गया, इस पर वह बेहद खुश हुआ और गाँव लौटा।

- कृष्ण कुलकर्णी

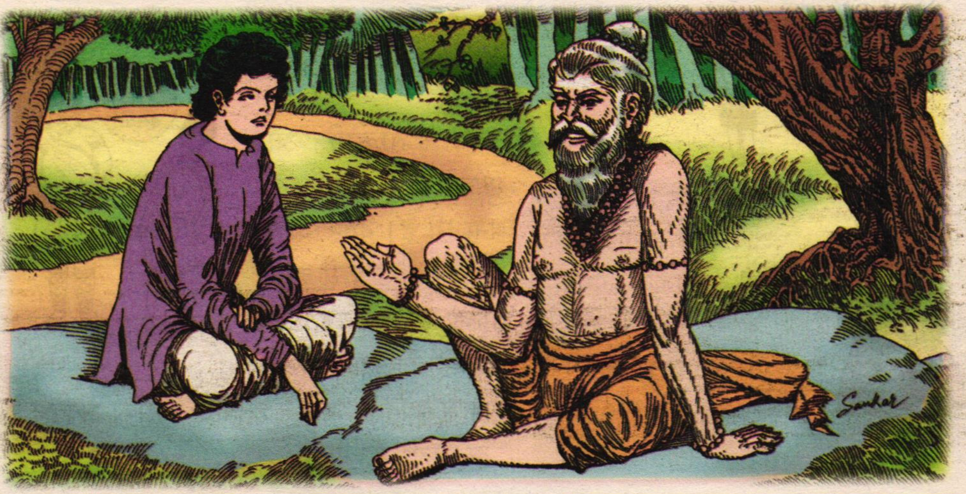

कहानी 'सुधीर चला शहर को' hindi.chandamama.com पर

गोस्ट रेस्तराँ

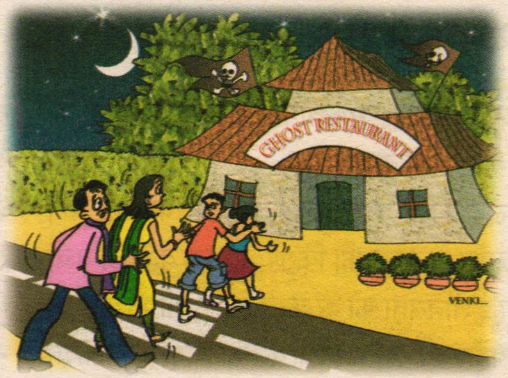

इसी नवंबर महीने से कोलकाता से कुछ किलोमीटर दूर, नेशनल हाईवे-६ पर स्थित इस रेस्तराँ को आप देख सकते हैं। पर जाले लगे हुए भोजन-कक्ष तक एक कंकाल की सुरक्षा में चलने पर मत डरिएगा! एक स्वागत भरी मुस्कान के साथ भूत ऑर्डर लेंगे और पिशाच आपके साथ बैठने के लिए दीवारों पर लगी तस्वीरों से उतर आएँगे। इस भोजनालय का निर्माण विश्व प्रसिद्ध जादूगर पी सी सरकार (जूनियर) द्वारा किया गया है। उजाड़-से दिखने वाले इस घर को जिसके हाते में कब्र हैं, भूतहे चित्र और छोटी खिड़कियाँ हैं, बिखरे हुए प्रकाश, लेज़र किरणों तथा सजीव मॉडल से प्रभावपूर्ण बनाया जाएगा।

पकड़ौउवा विवाह

यह भारत की अनेकता में एकता के बारे में हम जो कहते हैं, वह व्यर्थ नहीं है। जहाँ दहेज जैसी बुरी प्रथा है, वहाँ एक ऐसी प्रथा भी साथ-साथ व्याप्त है जिसमें दहेज माँगनेवाले दूल्हे का वास्तव में बलपूर्वक विवाह कराया जा सकता है-चाहे वह इसे पसंद करे या न करे! यह प्रथा ''पकड़ौउवा विवाह'' कहलाती है और बिहार में अभी भी प्रचलित है। इस प्रथा के अनुसार अगर दुल्हन और उसके परिवार के सदस्यों को दूल्हा जँच जाता है, लेकिन दहेज की माँग बहुत अधिक दिखाई देती है तो ऐसे में वे उसे ''जीतने'' के लिए यह फिल्मी तकनीक प्रयोग में ला सकते हैं। बदमाशों के एक दल को खतरे से अनजान दूल्हे पर छोड़ दिया जाता है और उसका अपहरण कर दुल्हन के परिवार को सौंप दिया जाता है। तत्पश्चात् विवाह विधि-विधान से संपन्न होता है! अगर दूल्हा राज़ी नहीं है तो भी विवाह में उस की सुनवाई न के बराबर है!

hindi.chandamama.com पर पढ़ें मज़ेदार कॉमिक्स

इतिहास के पन्ने

कमल स्त्री

सन् १५६१, मालवा की राजधानी, मान्डू का नगर, रीवा कुन्ड।

वह क्रीड़ा भवन के अंतिम छोर पर बैठी थी। साँझ के सूरज की किरणें, गुम्बदों के नीचे बची हुई शीतलता को दूर करते हुए, अभी भी फर्श पर पहुँच रही थीं। उसने पत्थरों की चिकनी चमकदार सतह पर कोमलता से अपना हाथ घुमाया। ये विशेष रूप से तराशे गए थे, जिससे कि उसके कोमल गोरे हाथ को उनकी खुरदरी सतह से चोट न पहुँचे।

उससे बहुत नीचे, सुदूर रुपहले व सुनहरे घाव की एक रेखा, शाम के सूर्य में चमक रही थी मानो उस पर हीरे तैर रहे हों। नर्मदा, खूबसूरत नदी नर्मदा-या रीवा, जो वह इसे पुकारना पसंद करती थी। धरती की संपदा, वरदानी देवी जिसने मान्डू को जीवन प्रदान किया। इस छोटे किन्तु समृद्ध साम्राज्य को जिन्होंने बनाया उन नर और नारियों की यही एकमात्र सूत्र थी। किले की दीवारों से नीचे बहती हुई रंग बिरंगी ज़िंदगी को निहारते, स्वयं हँसते व मुस्कुराते, उसने क्रीड़ाभवन में कितने ही घंटे बिता दिए!

कहीं बहुत दूर से चीखने और चिल्लाने की हल्की सी आवाज़ें उस तक पहुँची। या यह मात्र उसकी कल्पना थी? इन दिनों, ऐसा लगता था कि वह सच में किन्हीं दो के बीच का अंतर नहीं बता सकती थी। अधिक और अधिक वह बीती हुई चीज़ों की यादों में डूबती गई - क्या यह हाल ही में हुई घटनाओं का एक परिणाम था?

किसी ने सावधानी से उसे पुकारा। ''महारानी जी?'' माल्वा की रानी रूपमती ने ऊपर देखा और मुस्कुराई। उन्हें देख कर ऐसा लगा मानो घने काले बादलों से सूर्य का प्रकाश फूट पड़ा हो। दासी आकर झुकी और रत्नजड़ित प्याले में एक पेय थमाया। उसने वह ले लिया, इसकी घूमती हुई गहराई में झाँका। और हमेशा की तरह, वास्तविकता घुँघरुओं की झनकार और खिलखिलाहट में विलीन हो गई...

***

सारी दुनिया के रुचिकर समाचार पढ़ें hindi.chandamama.com पर

सन् १५५६, सीमान्त मान्डू, फलों का उद्यान।

मियाँ बायेज़िद बाज़ बहादुर अभी ही अपने शहर के झगड़े को निपटा कर एक पूरी तरह थकाने वाले सफर से लौटा था- और यह उसे कतई ज़रूरी नहीं लगा था। वह एक जवान आदमी था जो समझता था कि मालवा के सुल्तान के तौर पर काम करना उसका फर्ज़ था, लेकिन ये किसने कहा कि उसे इसमें मज़े लेने चाहिए? उसे तो एक छोटी सी रियासत की हद में आरामदेह, धीमी मस्त चाल की ज़िन्दगी की आरज़ू थी जिसके वह सालों से मज़े ले रहा था: संगीत, किताबें और कलाएँ, अच्छा खाना, कपड़े, जबकि उसकी रियासत के सूबेदारों ने फर्ज़ की अदायगी पर ध्यान दिया। अक्सर उसे अपने रेशम के गद्दों से उठना पड़ता और उसके लोग सब ठीक ठाक हैं यह तय करना पड़ता था- हालांकि वह बहुत ईमानदार था और मालवा एक खुशहाल ज़मीन रहे इसकी अच्छी तरह परवाह करता था, फिर भी यह उसे बहुत ही मेहनत का काम लगता था। सूरज उसके पगड़ी बँधे हुए सर पर दहक रहा था, और यहाँ तक कि उस के घोड़े भी इसे एक कामकाजी दिन के बाद विश्राम के लिए तैयार थे -

...तभी बहुत ही खूबसूरत अनजानी जनानी आवाज़ ने उसके कानों पर हमला किया।

अब तक जो उसने खूबसूरत चीज़ें देखीं सब उसे जुड़ती हुई दिखने लगीं- खिले हुए गुलाब, चाँद की दूधिया चाँदनी, रेशम की मखमली चमक- लगभग पूरी बेहोशी के आलम में मीठी

धुन का पीछा करते हुए वह अपने घोड़े को एक मन्द चाल में चलाने लगा।

एक बाँका छैल छबीला गर्वीला,
कोई न देखे रूप ये न्यारा-
बने कफ़न तेरा रखवाला,
तेरा मान जब संकट में हो,
ताज से मौत हो कहीं प्यारा !

आह, वह दुख भरी गाथा चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की कहानी गाई गई। यह उसके दिल के दर्द और कल्पनाओं को झकझोरने में कभी नाकामयाब नहीं रहा।

उसका अपना अनुभव था कि जिनकी आवाज़ खूबसूरत होती है, उनमें से बहुत कम ही शारीरिक सुन्दरता के मामले में भाग्यवान होते हैं। तब, आवाज़ की मालकिन कैसी दिखती है, यह न जानते हुए भी, बाज़ बहादुर ने इस आवाज़

गरुड़ जैसी और कॉमिक्स? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

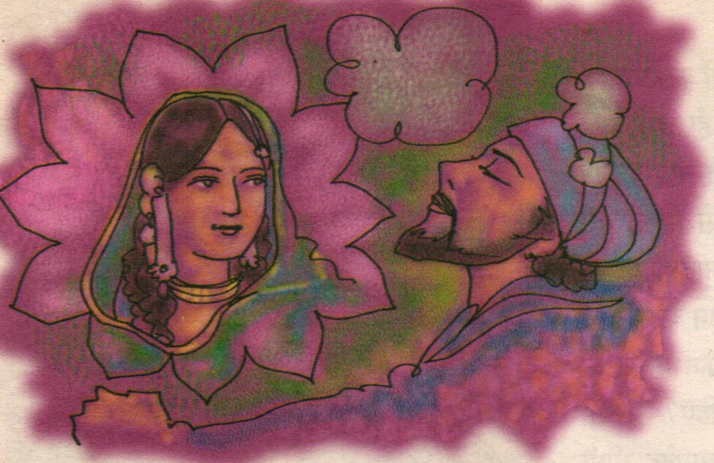

द्वारा लाई गई बड़ी सेनाओं को ध्यान में रखते हुए, एक बहुत कम संख्या थी। उन्होंने उसे पूरी तरह पराजित कर दिया और अब तो उन्हें जीत का खिताब मिल गया होगा, उसने घृणापूर्वक सोचा। वह, बाज़ बहादुर, मालवा का सुल्तान, हमले की तैयारियों के समय अपनी कला और संगीत के साथ व्यस्त था। अब, उसके देश ने मौत से मूल्य चुकाया।

वही उस की रानी, प्रिय रूपमती ने- जिसकी सुंदरता के किस्से आदम खान ने सुने थे, उसने कहा।

दर्द की कराहट के साथ अपने घाव पोंछते हुए उसने सोचा, यह सच में हुआ होगा। उनका विवाह पूरे देश में चर्चित था, इसलिए क्योंकि यह क्रांतिकारी था। बाग की गायिका मान्डू के एक छोटे लेकिन सम्मानित परिवार की राजपूत लड़की में बदल गई। रूपमती ने जैसे ही उसे देखा, वह उसके प्यार में पड़ गई।

उनकी जिंदगियाँ इतनी सर्वगुण संपन्न थीं कि वह डरता था कि उनको किसी की बुरी नज़र न लगे। वे उसे कमल जैसी स्त्री बुलाने लगे। उसने उसके लिए रीवा कुंड और रानी क्रीड़ास्थल बनवाया- उसे नर्मदा नदी से प्रेम था। और इसे वह हर समय अपने कक्ष से देखना चाहती थी। उनका जीवन खुशियों और प्रेम से भरा, अविनाशी...

का सम्मान करने का निर्णय लिया।

वह झीने से कपड़े से अपने मुँह को थोड़ा ढके हुए तीन-चार अन्य औरतों के साथ बैठी हुई गा रही थी। गुलाब की पत्ती सा उसका रंग था, आँखें माणिक की तरह चमकीली थीं; चेरी की तरह लाल उसके होंठ थे और एक साधारण सी कहानी में अकथनीय सुंदरता एवं सौम्यता जोड़ते हुए गाने के साथ वह धीरे से झूम रही थी। औरों की तुलना में वह खुशनुमा चाँद, आसमान का फरिश्ता लग रही थी।

बाज़ बहादुर उसका नाम, घर-परिवार या जिंदगी कुछ नहीं जानता था--लेकिन वह जान गया कि यह उसकी पत्नी हो सकती थी।

***

२९ मार्च, सन् १५६१, सारंगपुर का युद्ध, मालवा

पेड़ों के बीच से, वह युद्ध का मैदान देख सकता था, बिखरी हुई आदमियों, घोड़ों और हाथियों की लाशें-बादशाह अकबर के विश्वासपात्र सेनापति पीर मुहम्मद खान और आदम खान

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त एसएमएस hindi.chandamama.com से

....और अब तक।

मालवा तबाह हो चुका था- जीत की कोई उम्मीद न थी, बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र मुगलों के लिए था। एक सुल्तान के रूप में- एक साधारण आदमी के रूप में भी, उसकी ज़िंदगी अंतिम पड़ाव पर थी। चित्तौड़गढ़ तक का, मदद के लिए, उसका सफर नाकाम रहा। हार, नुकसान और दुखों का पहाड़ उसके सामने मुँह बाये खड़े थे।

रूपमती-सबसे प्रिय। वह क्या सोचेगी, जब उसे पता चलेगा? वह क्या करेगी? उसकी सुरक्षा के लिए उसे वहाँ होना चाहिए, पति और सुल्तान के रूप में उसे बचाना चाहिए- वह नाकाम रहा....

पुरानी स्मृतियों को याद करते हुए उसके होंठ बुदबुदाए।

''क्या तुम्हारा सम्मान अपध्वस्त होना चाहिए था, मुकुट से कहीं अधिक अच्छी मृत्यु है!''

***

३० मार्च, सन् १५६१, रीवा कुंड, मान्डू।

महल में हड़कंप मचगया। उन्होंने कहा, ''शत्रु आ गया।'' सड़कों पर चिल्लाते हुए नर-नारियों का तूफान छा गया। सुल्तान के न होने के कारण कोई सुरक्षा नहीं थी। थोड़ी सी सेना बड़ी मुश्किल से शाही महल की सुरक्षा व्यवस्था में लगी थी- लेकिन मुगल सैनिक जीत के नशे में चूर थे।

वह नहीं जानती थी कि उसका पति जीवित है या नहीं। पर अब इस से कोई फर्क नहीं पड़ता था। आदम खान रूपमती को बंदी बनाने आ वहाँ चुका था। उसने अपने हाथों के पेय की ओर चिन्तित होकर देखा।

''विदा दो'', उसने अपनी विश्वस्त ''तुम और मैं, सखी थीं- और मैं प्रसन्न हूँ कि तुम मेरी अंतिम इच्छा पूरी कर सकती हो। केवल एक अफसोस है कि मरने से पहले मैं उनके अंतिम दर्शन न कर सकी।'' जैसे ही दासी चीखी और दुर्भाग्य पर विलाप करने लगी, रानी ने विष का प्याला पी लिया।

जब आदम खान तूफान की तरह महल के दरवाज़े से दाखिल हुआ, उसे केवल रानी रूपमती का निर्जीव शरीर प्राप्त हुआ। मृत्यु के समय भी उसका मुँह नर्मदा की तरफ था- जैसे अपने जीवन में हमेशा किए रहती थी। **- पवित्रा श्रीनिवासन**

नए संगह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपका प्रतिक्रिया> 54646 पर एसएमएस करें

शाही खाना

हलवे का स्वागत कीजिए

टर्की में हलवा सबसे पुराना मिष्टान्न माना जाता है। तेरहवीं शताब्दी के मेव्लाना जलालुद्दीन-ई-रूमी, जिन्होंने भोजन के बारे में विस्तार से लिखा है, की रचनाओं में इस मिष्टान्न का ज़िक्र मिलता है।

****

टर्की का हलवा सूजी को पका कर और लड्डू का आकार दे कर बनाया जाता था। चीनी के प्रयोग से बहुत पहले, लड्डुओं को शहद या पेकमेज नामक अंगूर के रस से मीठा किया जाता था।

****

पंद्रहवीं शताब्दी में, सुल्तान ''महान सुलेमान'' ने अपने टोपकापी महल को दुबारा बनवाने का आदेश दिया जिसमें 'हल्वाहाने' या 'हलवा घर' को शामिल किया जा सके और जो विभिन्न प्रकार के हलवे बनाये।

****

ग्रीक लोग टहिनि के साथ ''माकेडोनिकोज़ हलवा'' नामक एक प्रकार का हलवा बनाते थे जो ईंट के रूप में बिकता था। वे हलवे पर नींबू का रस और दालचीनी बुरक कर खाना पसंद करते थे।

****

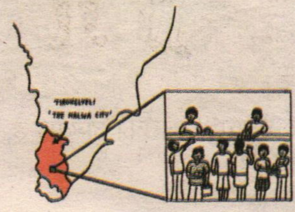

तमिलनाडु का तिरुनेलवेली शहर ''हलवा शहर'' नाम से जाना जाता है। आटे का हलवा, तिरुनेलवेली में तीन सौ वर्षों से प्रवासित मारवाड़ी परिवारों से मशहूर हुआ।

खाने में ऑक्टोपस? और मज़ेदार कहनियाँ hindi.chandamama.com पर

मुगलों ने भारत को सोलहवीं शताब्दी में हलवे से परिचित करवाया। गाजर के हलवे से लेकर सीताफल के हलवे तक, पूर्व के सभी देशों में से भारत में ही हलवे की सब से अनूठी पाक विधियाँ हैं।

****

सत्रहवीं शताब्दी में, इस्तनबुल का सभ्य समाज ''हलवा रात्रि भोज'' आयोजित करता था जो बिलकुल एक विचार गोष्ठी के समान होता था। बातचीत के बीच में हलवा एक प्रकार के मध्यांतर के तौर पर परोसा जाता था।

****

अधिकांशतया हम सभी के लिए हलवा भोजन के बाद खाई जाने वाली एक मिठाई है पर ईरान में लोग हलवा पर्शियन फ्लैट ब्रेड लैवाश के बीच में लगा कर मुख्य भोजन के रूप में लेते हैं- बिलकुल एक ''हलवा सैंडविच'' की तरह।

****

बल्गारिया में ''सफेद हलवा'' श्रोव इतवार को हमकाने नामक संस्कार हेतु प्रयोग में लाया जाता है। हलवे के एक टुकड़े को एक लंबे डंडे पर धागे से बाँध दिया जाता है और इसे घुमाया जाता है। बच्चे हलवे को अपने मुँह से पकड़ने की कोशिश करते हैं।

****

हलवे ने लोकोक्ति और मुहावरों में भी अपनी जगह बना ली है। बोस्निया के मुहावरे ''प्रोडाजे से काओ अल्वा'' का मतलब है ''हलवे की तरह बिकता है''। एक ग्रीक कहावत है ''एन्टे रे, हलवा!'' जिसका अनुवाद है, ''दूर जाओ, हलवा!''

क्या आप हलवे के शौकीन है? क्या आप हलवे की दुकान खोलना चाहते हैं? शुरू हो जाइए...याद रखिए, हलवे की तरह कुछ नहीं बिकता।

चुटकुला भेजें। एसएमएस करें CJOKE <आपका जोक> 54646 पर

संदेह दूर हुआ

सत्यवान एक संदेह को दूर करने के उद्देश्य से तीन महीने पहले गाँव छोड़कर चल पड़ा था। जब वह अरण्य मार्ग से गुज़र रहा था, तब उसने देखा कि एक बूढ़ा साधु बेहोश पड़ा हुआ है। वह तुरंत पानी ले आया, उसके मुँह पर छिड़का, और बाकी पानी उसे पिलाया। पास ही के पेड़ों से फल तोड़े और उसे खिलाया।

फल खा चुकने के बाद साधु ने कहा, "भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे पुत्र।"

"मैं यही जानने गाँव छोड़कर घूम रहा हूँ कि भगवान कहाँ हैं। इसपर लोग तरह-तरह के अभिप्राय बता रहे हैं। कुछ लोग तो मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। कुछ लोगों का दावा है कि भगवान है ही नहीं। क्या असल में भगवान नामक कोई है? अगर है तो कहाँ है?" सत्यवान ने पूछा।

साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, "बहुत बड़ा सवाल पूछा तुमने। इसका समाधान जानने के प्रयत्नों में ही मेरी यह हालत हो गयी। यह अनंत अन्वेषण है। अब रही अभिप्रायों की बात। वे अपने-अपने अनुभवों पर आधारित होते हैं। कल या परसों गिरनेवाला पका पत्ता हूँ मैं। जहाँ तक मेरी बात है, भगवान अणु-अणु में रहते हैं। दूसरे की भलाई चाहने वाले हर व्यक्ति के हृदय में वे रहते हैं। मैं मरने ही वाला था। तुमने मुझे बचाया। तुम मेरे लिए भगवान हो। दूसरे में अच्छाई देखने वाले हर व्यक्ति ने भगवान को देखा होगा। निःसंदेह मैं यह कह सकता हूँ।"

सत्यवान ने साधु को नमस्कार किया। इतने लंबे अर्से के बाद उसके प्रश्न का समाधान मिल गया, इस पर वह बेहद खुश हुआ और गाँव लौटा।

- कृष्ण कुलकर्णी

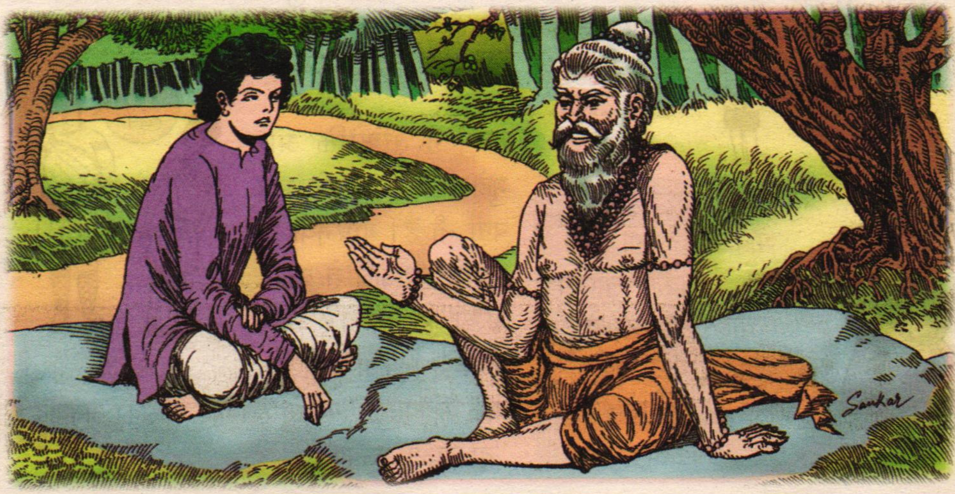

कहानी 'सुधीर चला शहर को' hindi.chandamama.com पर

पहरेदार

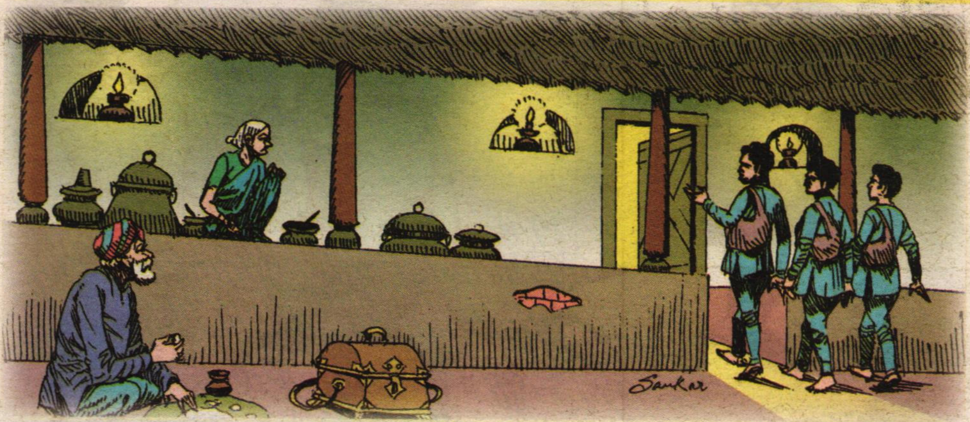

विजयगिरि संस्थान के अधिपति रंगभूपति और उनके मंत्री चंद्रवर्मा जनता के सुख-दुख जानने के लिए बहुरूपिया बनकर रातों को नगर में घूमा करते थे। राजा जब नहीं आते थे, तब चंद्रवर्मा अकेले ही जाते थे।

एक दिन रात को उन्होंने चूड़ियों के गुच्छे अपने कंधे पर डाल लिये और नगर में घूमने निकल पड़े, मानो वे चूड़ियाँ बेच रहे हों। जब उन्हें भूख लगी तो वे छोटे-से भोजनालय में आये, जिसे एक बुढ़िया चला रही थी। बहुत रात हो जाने पर वे भोजन करने बैठ गये।

उस समय तीन युवक वहाँ आ धमके। उन्होंने बुढ़िया से कहा कि हम नौकरी ढूँढ़ने रावपानी जा रहे हैं, चूँकि रात बहुत हो गयी है, इसलिए भोजन करके यहीं लेटेंगे और सवेरे चले जायेंगे।

''हाथ-पैर धो आओ। खाना लगा दूँगी'', बुढ़िया ने कहा।

''हमने तो रास्ते में ही हाथ-पाँव धो लिए थे। पहले खाना परोसो,'' कहते हुए उनमें से दो युवक चंद्रवर्मा के बग़ल में बैठ गये।

तीसरे युवक ने पूछा, ''हाथ-पैर धोने की जगह कहाँ है?'' जानकारी पाकर वह पिछवाड़े गया और हाथ-पाँव धोकर लौटा। उसने थैली में से एक तौलिया निकाला और उसे कंधे पर डालकर बैठ गया।

मंत्री ध्यान से उसे देखने लगे। बातों से मालूम हुआ कि उसका नाम बलराम है और शेष दोनों के नाम भूषण और नागराज हैं।

दोनों मित्र आपस में गपशप करते हुए जल्दी-जल्दी खाने लगे। पर बलराम बुढ़िया की प्रशंसा करते हुए कहने लगा, ''करेले की यह तरकारी कितनी स्वादिष्ट है। काली मिर्च का यह रस अद्भुत है। दही कितना मीठा है।'' यों हर भोज्य पदार्थ की वह भरपूर प्रशंसा करने लगा।

मज़ेदार चुटकुलों के लिए आइए hindi.chandamama.com

जब उनका भोजन हो चुका तो बुढ़िया ने उनके लेटने के लिए चटाइयाँ बिछा दीं। दोनों मित्र जंभाई लेते हुए कहने लगे, ''बहुत थक गये हैं। अब हम आराम से सोएँगे।'' कहकर वे तुरंत सो गये। पर बलराम ने कहा, ''मैं बाहर चबूतरे पर सो जाऊँगा। मैं तुम्हारे घर की रखवाली भी करूँगा और साथ ही इस नगर के बारे में जानकारी भी पाऊँगा।'' कहते हुए वह चटाई लेकर बाहर चला गया।

बुढ़िया ने चंद्रवर्मा के लिए भी एक चटाई बिछा दी। चंद्रवर्मा का सोने का कोई इरादा न था पर वह लेट गए। उन्होंने चूड़ियों के गुच्छों को सिर के पास रख लिया और लेटकर किसी सोच में पड़ गये। आधी रात को बाहर से किसी के चिल्लाने की आवाज़ आयी तो दरवाज़ा खोलकर बाहर आये।

उन्होंने देखा कि बलराम एक आदमी को पकड़े हुआ था, जिसके चेहरे पर कपड़ा ढका हुआ था। वह उस आदमी से कह रहा था, ''क्या तुमने इसे अपने बाप का माल समझ रखा है!''

''यह तो तुम्हारा नहीं है। फिर तुम क्यों इतना नाराज़ होते हो?'' वह आदमी अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहने लगा। मंत्री ने पूछा, ''आख़िर विषय क्या है? तुमने इसे क्यों पकड़ रखा है? इसने ऐसा क्या किया है?''

''यह बदमाश जूतों की चोरी कर रहा था। मैंने इसे पकड़ लिया। देखने में तो ये बहुत क़ीमती जूते लगते हैं। शायद ये आप ही के होंगे। इन जूतों को खरीदने के लिए आपने कितना कष्ट उठाया होगा और यह चोर आसानी से उड़ा ले जाना चाहता है। अच्छा हुआ, ठीक समय पर मैं

अलग-अलग राज्यों की लोक कथाएँ hindi.chandamama.com पर

यहाँ मौजूद हूँ।'' बलराम ने पूरा विषय बताया।

''उसके कहे अनुसार ये तुम्हारे जूते नहीं हैं। ये क़ीमती भी हों तो इससे तुम्हारा क्या मतलब? मैंने तो तुमसे कहा भी नहीं कि मेरे जूतों की रखवाली करना'', चंद्रवर्मा ने पूछा।

''आप भी क्या कहने लगे, महाशय। मैं बाहर लेटा हुआ हूँ। थककर, हो सकता है, मैं सो जाऊँ। अगर आपने इनकी रखवाली का काम मुझे नहीं भी सौंपा हो, फिर भी मैंने इस बुज़ुर्ग स्त्री का नमक खाया है अतः इस जगह की रखवाली करना क्या मेरा कर्तव्य नहीं? इसके अलावा ऐसे चोरों को छोड़ने का मतलब होता है, इन्हें प्रोत्साहन देना, इनकी तरफ़दारी करना। ऐसा करना भी एक अपराध है। राज्य के एक नागरिक होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है'', बलराम ने ज़ोर देते हुए कहा। तब भी वह चोर को पकड़े हुए ही था। इतने में भूषण और नागराज भी आये। दोनों ने भी चोर को खूब पकड़ रखा, जिससे वह भाग न जाए।

चंद्रवर्मा मन ही मन बलराम की प्रशंसा करते हुए बोले, ''इस चोर का क्या करनेवाले हो?''

''पहरेदारों के सुपुर्द करूँगा। राजा इसे कड़ी सज़ा देंगे। बेरोज़गार युवकों के लिए सही नौकरी का प्रबंध किया जाए तो इस प्रकार के अपराध नहीं होंगे। अधिकारियों को चाहिये कि वे इस सच्चाई को जानें और आवश्यक कार्रवाई करें।'' बलराम ने कहा। ''शाबाश'' कहते हुए चंद्रवर्मा ने उसकी प्रशंसा की। सवेरा होने पर उन्होंने बताया कि वे कौन हैं। फिर उन्हें साथ लेकर वे राजभवन की ओर गये।

बलराम के कारण चंद्रवर्मा की एक समस्या का हल हो गया। इधर कुछ दिनों से वे राजभवन का पहरा देने योग्य एक पहरेदार की खोज में थे। वे सोच में पड़ गये कि ऐसे योग्य व्यक्ति को कैसे चुना जाए। बलराम उन्हें सब प्रकार से योग्य लगा। साथ ही उन्हें बलराम की ईमानदारी तथा कर्तव्यनिष्ठापूर्ण व्यवहार बहुत पसंद आया। बलराम को सही प्रशिक्षण देकर उसे राजभवन के पहरेदार के पद पर नियुक्त किया। बाकी दोनों को भी उनकी योग्यताओं के अनुसार नौकरियाँ दी गयीं।

- उदित वर्मा

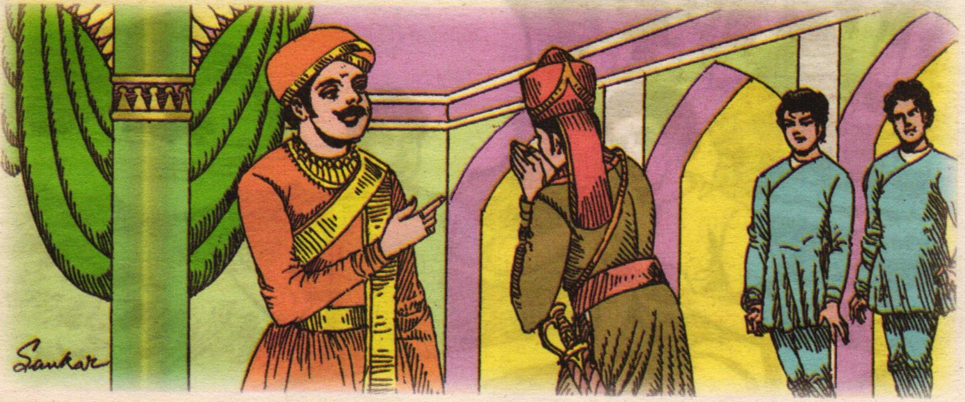

जल्दी से कुछ पढ़ना है? लघु कथाएँ hindi.chandamama.com पर

दृश्य-भाव

सत्य प्रभाशानंद का प्रवचन सुनने के बाद श्रीधर और भास्कर लौट रहे थे। एक दृश्य को देखकर दोनों अवाक् रह गये। उन दोनों ने एक कौवे की संतान और एक गिद्ध को देखा जो कौवे की संतान को आहार खिला रहा था। इस अद्‌भुत दृश्य को देखकर उद्विग्न भास्कर जड़वत् वहीं का वहीं खड़ा रह गया। पर श्रीधर गाँव की ओर बढ़ चला।

भास्कर उस दृश्य को देखते हुए अपने आप कहने लगा, ''वाह रे वाह, स्वामी की बातों में कितना सत्य भरा पड़ा है। पत्थर के अंदर के वे मेंढक और पके फल के अंदर के कीड़े को आहार देनेवाला कोई और नहीं, साक्षात् भगवान ही है। गिद्ध अपना आहार कौवे की संतान को खिला रहा है, यह भगवान की कृपा नहीं तो और क्या है? वह दयालु क्या मेरे इस छोटे से पेट को भरने का मार्ग नहीं दिखायेगा?'' यों कहते हुए पास ही के मार्गबंधेश्वर मंदिर की सीढ़ी पर बैठ गया। शाम तक कोई भी वहाँ से नहीं गुजरा। वह भूख के मारे तड़पने लगा। उसे भगवान पर क्रोध आया।

सूर्यास्त के बाद उसे ढूँढते हुए श्रीधर वहाँ आया। भास्कर ने श्रीधर से पूछा, ''भगवान मुझ भूख से तड़पते लाचार की सहायता क्यों नहीं करते?'' उसने कहा, ''जब पत्थर पर बैठ तुम आलसी बन गए तो भगवान क्या सहायता करेगा? कौवे की संतान और गिद्ध के दृश्य ने तुम्हें भगवत् कृपा का अहसास कराया। पर उन्हें देख स्वयं को लाचार समझना तुम्हारा अविवेक नहीं तो और क्या है?

''जिस प्रकार गिद्ध एक असहाय कौवे की संतान को खिला रहा है उसी प्रकार शक्ति और युक्ति से भरे मनुष्य को चाहिये कि वह निस्सहायों की सहायता करे। यह उसका कर्तव्य भी है। यही तो उस दृश्य का भाव है। दोस्त, अपनी बुद्धि का उपयोग करो और इस दृश्य और भाव की गहराई को जानो।'' फिर वह भास्कर को लेकर गाँव की ओर लौट चला। ***- मंजु भारती***

खाने में ऑक्टोपस? और मज़ेदार कहनियाँ hindi.chandamama.com पर

कैफ़ियत

गणित में माहिर होने पर भी गोपी कक्षा परीक्षा में बीसवें स्थान पर आया जब कि गणित में कमज़ोर राम प्रथम आया ।

"तुम लापरवाह हो, इसीलिए छोटी-छोटी ग़लतियाँ कर बैठते हो, जिसके कारण अंक कम पाते हो", उसके पिता कहा करते थे और छुट्टी के दिनों में भी उससे ज़बरन गणित करवाते थे। इतवार जो आया, बस, घर से ग़ायब। पता नहीं, कहाँ-कहाँ घूमता फिरता है। "सवेरे जाते हो तो रात को ही घर लौटते हो। घर पर ही रहकर मेहनत करोगे तो गणित क्या, सब में अव्वल आ सकते हो।" यों पिता उसे डाँटते तो वह कहता, "मेरे जितने भी दोस्त हैं, सबके यहाँ वीडियो हैं। मुझे भी खरीदकर दोगे तो भला घर क्यों छोड़कर जाऊँगा?"

"एक बार कक्षा की गणित परीक्षा में अव्वल आओ तो ज़रूर वीडियो खरीदकर दूँगा", पिता ने कहा।

गोपी ने शर्त मान ली। उसे खुद मालूम था कि ध्यान लगाकर पढ़ूँगा तो गणित में प्रथम आऊँगा, किन्तु कभी दोस्त, कभी बीमारी तो कभी रिश्तेदारों के यहाँ शादी के कारण उसकी श्रेणी पाँच से ज़्यादा कभी नहीं आयी।

"मेरी कोई ग़लती नहीं है। दुर्भाग्य मेरा पीछा कर रहा है। मेरी परिस्थिति समझिये। जितनी जल्दी हो सके, वीडियो खरीदिये, वीडियो गेम्स खेलने में मुझे बड़ी रुचि है", गोपी ने पिता से विनती की।

"तुम्हारी कैफ़ियत ठीक है। पर अभी वीडियो गेम्स का नाम मत लेना।" उसके पिता ने साफ़-साफ़ कह दिया।

इसके बाद जो राम गणित में प्रथम आता था, उसको कुछ मुश्किलों की वजह से पचास प्रतिशत अंक मिले पर गोपी को नब्बे प्रतिशत। वह कक्षा में प्रथम आया। पिता ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, "आख़िर तुम्हारी चाह पूरी हुई। परंतु अब भी दुर्भाग्य तुम्हारा पीछा कर रहा है।

उस अजीब से सपने की कहानी hindi.chandamama.com पर

अभी मेरे पास इतनी रक़म नहीं है, इसलिए वीडियो गेम्स खरीद नहीं सकता।''

''यह सच है कि पिताजी के पास अब इतनी रक़म नहीं है। जब तुम क़ैफ़ियत तलब करते थे तब उन्होंने तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं किया। पर अब तुम्हें अपने पिता की बातों का विश्वास करना चाहिए।'' उसकी माँ ने कहा।

''जब जब मैं कैफ़ियत तलब करता था, तब-तब इसी प्रकार पिताजी को दुख होता होगा। जो भी हो आगे से उन्हें यह मौक़ा नहीं दूँगा। साबित करके रहूँगा कि मैं गणित में आगे से प्रथम अवश्य आऊँगा। यों उसने मन ही मन सोचा। पर उस शाम को राम वीडियो गेम्स ले आया और उससे कहा, ''यह लो, मेरे पिता ने यह खरीदकर मुझे दिया, क्योंकि मैं प्रथम आया। जब तक मैं फिर से प्रथम नहीं आऊँगा, तब तक इसे अपना ही समझो।''

गोपी ने चकित होकर कहा, ''इस बार तुम प्रथम नहीं आये, यह ग़लती तुम्हारी नहीं है। मैं खुद आकर यह बात उनसे कहूँगा। अपना वीडियो गेम्स तुम अपने ही पास रखना'', गोपी ने कहा।

''मेरे पिताजी का कहना है कि लक्ष्य को साधने के बदले क़ैफ़ियत तलब करना अच्छी आदत नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा विद्यार्थी कभी भी प्रथम नहीं आ सकता। कैफ़ियत तलब करना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं।'' कहकर राम चला गया।

अब गोपी की समझ में आया कि राम हमेशा गणित में क्यों प्रथम आता है। जब उसने यह बात घर में बतायी, तब गोपी के पिता ने कहा, ''राम का व्यक्तित्व उत्तम है। यह वीडियो गेम्स उसे लौटा दो। आज शाम को दोनों जायेंगे और वीडियो गेम्स खरीदकर लायेंगे।''

''पर आपके पास आवश्यक रक़म नहीं है?'' गोपी ने कहा।

''जहाँ क़ैफ़ियत तलब नहीं करनी पड़ती वहाँ महान कार्य साधे जा सकते हैं। यह सत्य मैं भी जान गया। मानता हूँ, मैंने भी ग़लती की।'' गोपी के पिता ने हँसते हुए कहा।

- दीपक कुमार

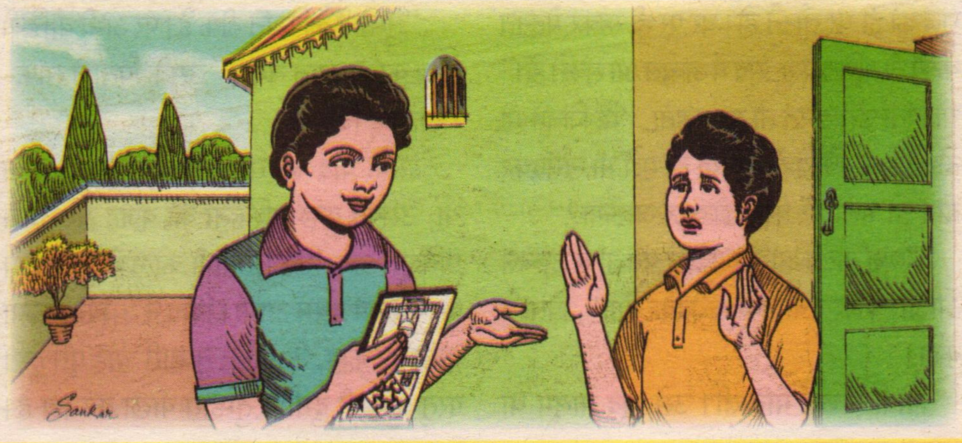

बीरबल के चतुराईपूर्ण हल पढ़ें hindi.chandamama.com पर

विवाह महोत्सव

सुमन पांडे बहुत बड़ा वैद्य था। उसकी चिकित्सा अचूक होती थी। गाँव का हर व्यक्ति उसका बड़ा आदर करता था। फ़ुरसत में वह राम मंदिर में बड़े ही रोचक तरीके से राम गाथा सुनाया करता था।

गाँव के प्रमुखों ने निर्णय किया कि इस साल रामनवमी के अवसर पर सीताराम विवाहोत्सव मनाया जाए। पुजारी व अन्य सभी इन कार्यों में तल्लीन हो गये।

रामनवमी के दिन पांडे प्रातःकाल ही नहा-धोकर मंदिर जाने के लिए निकलने लगा तो पत्नी की दर्द भरी चिल्लाहट सुनी। जाकर देखा पत्नी पैर फिसल जाने के कारण कुएँ के पास गिर गयी है। उसे दवा लगाई ही थी कि दरवाज़ा खटका। पांडे ने दरवाज़ा खोला।

''महोदय, मेरी गर्भिणी पुत्री अकस्मात् बेहोश हो गयी है। सभी लोग विवाह देखने मंदिर जा चुके हैं। आप ही मेरी पुत्री को बचा सकते हैं'', अधेड़ उम्र का एक आदमी हाथ जोड़कर गिड़गिड़ा रहा था।

पांडे दवाओं की थैली लिए उसके साथ निकल पड़ा। उसने गर्भवती स्त्री की नब्ज की जाँच की। फिर तुरंत एक दवा पिलायी और माथे पर एक तेल मला। थोड़ी देर बाद उस स्त्री का होश तो नहीं आया बल्कि उसने एक सुंदर शिशु को जन्म भी दिया।

श्रीराम विवाहोत्सव में शामिल न हो पाने पर पांडे बहुत दुखी हुआ और मन में सोचा कि मेरा कोई दोष होगा, अतः यह दुख मिला। उसने भगवान से क्षमा माँगी और लेट गया।

''वत्स! दुखी न हो। तुमने दो प्राणियों की रक्षा की। विवाहोत्सव से अधिक लोक-कल्याण के लिए तुम जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है।'' इन शब्दों को सुनकर वह चौंक उठा। उसकी समझ में नहीं आया कि यह सच है या सपना। आँख मूँदकर उसने सजल नयनों से हाथ जोड़ लिए।

- गोविंदराज

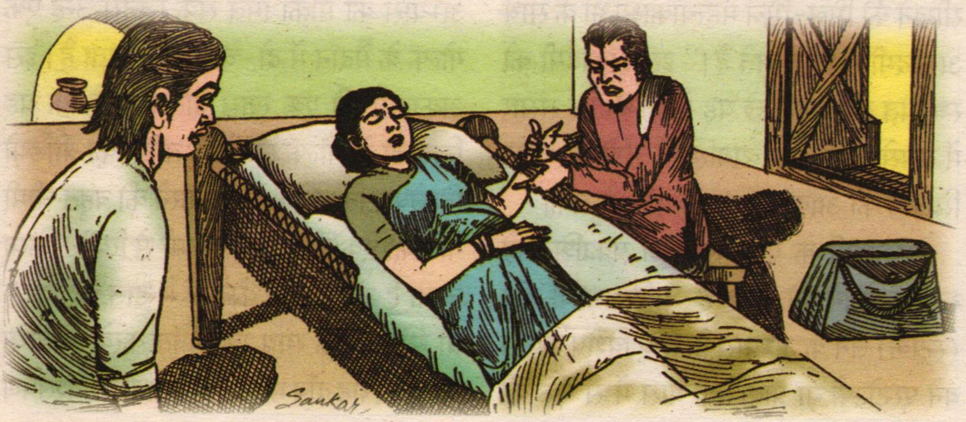

पसन्दीदा पुरानी कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com के संग्रह में

डी एल एफ गोल्फ अकादमी- अपनी गोल्फिंग योग्यता को सामने लाओ

हरियाणा की डी एल एफ गोल्फ अकादमी उन सभी का हार्दिक स्वागत करती है जो गोल्फ खेल सीखने के बहुत इच्छुक हैं। गोल्फ ६ वर्ष की उम्र के बच्चों से लेकर सी ई ओज तक के बीच तेज़ी से मशहूर हो रहा है। भारत की सबसे पहली व्यावसायिक गोल्फ अकादमियों में से एक, डी एल एफ गोल्फ अकादमी अब अपनी स्थापना के दसवें वर्ष में है और १९९९ से सभी उम्र के गोल्फर्स तैयार कर रही है।

डी एल एफ अकादमी के डायरेक्टर ऑफ इन्सट्रक्शन्स, करन बिंद्रा कहते हैं, ''गोल्फर्स खेल सीखने की भिन्न-भिन्न महत्त्वाकांक्षाओं के साथ अकादमी में प्रवेश लेते हैं।'' इस अकादमी को स्थापित करने के पीछे यह प्रेरणा थी कि संसार में सबसे बेहतर एक व्यवस्थित तरीके से गोल्फ सिखाने की आवश्यकता की पूर्ति हो सके।

अकादमी के पास एक पूर्ण प्रकाशित द्वि स्तरीय खेलने की जगह है- प्रशिक्षणार्थी दाँव (स्ट्रोक) लेने के अभ्यास के लिए विशेष रूप से बने एस्ट्रोटर्फ या प्राकृतिक घास में से एक को चुन सकते हैं। सुविधाओं में शामिल हैं-

- चार निशानों वाला घास का मैदान
- एक खेल पट्टी का क्षेत्र
- एक बड़े आकार का निश्चित मैदान
- एक अभ्यास तलघर (बंकर) के साथ एक छोटी दूरी की मार का मैदान।

इन सब की संरचना इस प्रकार की गई है कि खिलाड़ियों को हर संभव प्रकार के दाँव मारने के अभ्यास का मौका मिल सके जिनसे उन्हें एक गोल्फ के मैदान में दो-चार होना पड़ता है। इस अकादमी की एक खास बात और है कि यह खिलाड़ी के गोल्फ खेलने के तरीके का वीडियो विश्लेषण दिखाते हैं। दाँव मारने की बहुत धीमी गति को रिकॉर्ड करने वाले कैमरे से रिकॉर्ड किया जाता है और बाद में कंप्यूटर में डाल कर वि-१ प्रो सॉफ्टवेर के साथ विश्लेषित करके दिखाया जाता है। यह दाँव मारने की योग्यता के विश्लेषण

टेनिस, गोल्फ़, बॉक्सिंग? जानें hindi.chandamama.com पर

और सुधार की तकनीक विश्व की सर्वश्रेष्ठ गोल्फ अकादमियों की प्रशिक्षण विधियों के समान है।

इस अकादमी में भाषणों (लेक्चर्स) के लिए एक वीडियो कक्ष, वीडियो एवं पुस्तकों का संग्रहालय, एक गेंद संकलक व प्रेषक (बॉल कलैक्टर एंड डिसपैन्सिग) मशीन और एक जलपान गृह भी है। डी एल एफ अकादमी भारत की जानी मानी गोल्फ अकादमियों में एक छोटा अजूबा है जिसमें विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ शानदार प्रशिक्षण भी साथ में जुड़ा है। ''एशियन गोल्फ'' मासिक पत्रिका ने डी एल एफ गोल्फ अकादमी के मैदान को भारत में सर्वोच्च स्थान दिया है।

गोल्फ ने भारत में एक शानदार शुरुआत की है और गोल्फिंग संस्कृति अपनी जड़ें फैला रही है! यद्यपि क्रिकेट अभी भी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है, पर काफी नौजवान गोल्फ को गंभीरता व प्रतिबद्धता के साथ स्वीकार रहे हैं। करन बिंद्रा अकादमी की भविष्य की योजनाओं के बारे में बताते हैं, ''देश को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी देना और सभी उम्र और योग्यताओं के गोल्फर्स को खेल का आनंद लेना सिखाना!'' क्या आपके पास वह है जो आप टाइगर वुड्स या दिग्विजय सिंह जैसे खिलाड़ी बन सकें? डी एल एफ गोल्फ अकादमी संतुष्टिदायक गोल्फ खेलने के अनुभव हेतु एक महान स्थान है। और जैसा कि करन बिंद्रा कहते हैं, ''आनंद के लिए खेलो!''

संपर्क हेतु विवरणः

श्री करन बिंद्रा

(डायरेक्टर ऑफ इन्सट्रक्शन्स)

+91 98181 12330

पताः डी एल एफ गोल्फ अकादमी

डी एल एफ क्लब एंड रिज़ॉर्ट्स

डी एल एफ सिटी, फेस-V

गुड़गाँव, हरियाणा- 122 002

टेलीफोन नं : 0124 4525252

एक्सटेन्शनः 5245

ई मेलः karan@kbgolf.in

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त एसएमएस hindi.chandamama.com से

उदीयमान सितारा

ओलम्पियन मास्टर तैराक माइकल फैल्प्स तन्वी के आदर्श हैं। कॉमनवैल्थ गेम्स की मशाल जब बेलगाँव से गुज़र रही थी उसे उसको ले कर चलने का सम्मान मिला।

जीते गए अवार्ड्स

- इंद्रधनुष सम्मान अवार्ड (२००४ व २००६)
- गणराज्य स्टेट अवार्ड (२००५, २००६, २००७ व २००८)
- राज्योत्सव अवार्ड (२००६ व २००७)
- भटकन्डे स्पोर्टस अकादमी (२००८) का बैस्ट स्पोर्ट्स पर्सन अवार्ड।

तन्वी दोद्दनवर

बेलगाँव की १७ वर्षीय विजेता तैराक तन्वी दोद्दनवर के पास अपने सबसे प्यारे खेल के विषय में कहने के लिए बहुत कुछ है, ''तैराकी एक ऐसा खेल है जो आपकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए चिन्ता एवं तनाव कम करने में मदद करता है। इसके अलावा, यह आपको इतनी जल्दी नहीं थकाता जितना कि दौड़ने या किसी अन्य तरीके के अभ्यास थकाते हैं।'' तन्वी दिन में ५ घंटे अभ्यास करती है और एक अभ्यासावधि सत्र रोज़ का तक़रीबन ५-६ कि.मी. तक होता है। तन्वी कार्य की गुणवत्ता में विश्वास करती है, और इस प्रकार से वह अपने खेल एवं पढ़ाई में संतुलन रखती है। वह कहती है, ''अगर मैं एक घंटा पढ़ती हूँ तो मैं अपना १०० प्रतिशत ध्यान देती हूँ। इसलिए, मैं हमेशा से पढ़ाई में अच्छी हूँ।''

उसे बटरफ्लाई एवं बैक स्ट्रोक सर्वाधिक प्रिय हैं और उसने अपनी मनपसंद प्रतियोगिता, ५० मीटर बैक स्ट्रोक में एक राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किया है। वर्ष २००४ नासिक में आयोजित नेशनल सब जूनियर एक्वैटिक चैम्पियनशिप उसके कैरियर की सर्वाधिक चुनौती पूर्ण प्रतियोगिता थी।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करना तन्वी की सूची में सर्वोपरि है। खेलों में रुचि रखनेवाले सभी बच्चों के लिए उसका संदेश है, ''हमेशा स्वयं में विश्वास रखो, अपने कोच पर भरोसा करो और अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञ रहो!''

इस महीने के उदीयमान सितारे को *चन्दामामा* की शुभकामनाएँ!

नए चुटकुले पढ़ें hindi.chandamama.com पर

इतिहास में एक कोर्स !

प्राचीन चीन में आधुनिक गोल्फ के समान एक खेल खेला जाता था। ९४३ ईसा पूर्व, यह खेल 'चुई-वान'' (चुई-मारना, वान-छोटी गेंद) कहलाता था। इस खेल में एक छड़ी की सहायता से एक गेंद को ज़मींन में बने गड्ढों तक ला कर डाला जाता था। रोमवासी ''पागानिका'' नामक एक खेल खेलते थे जिसमें निशाना मारने के लिए मुड़ी हुई छड़ व चमड़े की गेंद प्रयोग में लाई जाती थी। ऐसा विश्वास है कि रोमवासियों ने ही इस खेल को दूसरे यूरोपीय देशों में पहुँचाया।

१४५२ में किंग जेम्स द्वितीय ने स्कॉटलैंड में इस खेल पर प्रतिबंध लगा दिया। क्यों? क्योंकि राजा ने महसूस किया कि यह खेल, विशेष तौर पर उसके नए सैनिकों को तीरंदाज़ी के अभ्यास से विमुख कर सैन्य अभ्यास में हस्तक्षेप कर रहा था। १५०२ में जबकि यह प्रतिबंध, किंग जेम्स चतुर्थ, द्वारा हटा दिया गया। स्कॉट्स की रानी, मैरी ने १५६७ में गोल्फ खेला और पहली महिला गोल्फर मानी गयीं। १७६४में १८ गड्ढों का गोल्फ कोर्स अभ्यास में आया।

मिनी गोल्फ इस खेल का कलात्मक लघु रूप है। सबसे पुराना लघु गोल्फ लेडीज़ पुटिंग क्लब स्कॉटलैंड में १८६७ में स्थापित किया गया। इसमें ''हिमालयाज़'' नामक एक १८ गड्ढों का कोर्स है। ज्यामितीय गोल्फ कोर्से बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में अस्तित्व में आए।

यू एस अंतरिक्ष यात्री अपोलो १४ के कमाण्डर एलन शेफर्ड ने १९७१ में चाँद की सतह पर गोल्फ खेलते हुए एक शॉट लिया। एक रूसी अन्तरिक्ष यात्री माइकेल टाइरिन ने २३ नवंबर २००६ को (कैनेडियन गोल्फ मेकर्स ऐलिमेंट २१ गोल्फ द्वारा प्रायोजित) अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन से सुनहरी मुलम्मे की (गोल्ड प्लेटेड) छड़ प्रयोग करते हुए एक बहुत हल्के भार की गोल्फ गेंद को मार कर इतिहास बनाया। गोल्फ अकेला ऐसा खेल है जो अंतरिक्ष में खेला गया, वह भी एक बार नहीं, बल्कि दो बार!

मैच बारिश में धुल गया? आइये hindi.chandamama.com पर

समाचार झलक

पहली उड़ने वाली कार

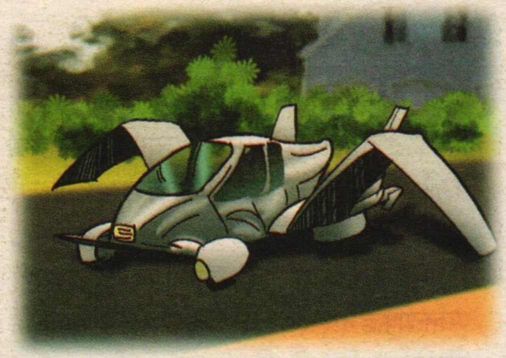

बोस्टन के पास स्थापित एक अमरीकी कंपनी, टेराफूजिआ ट्रान्ज़िशन, सन् २०११ में द्वि-उद्देशीय कार-सह-हवाई जहाज़ के अनावरण हेतु प्रतिबद्ध है। अगर आप चाहें तो दो सीटों वाला यह वाहन आपको शहर के ट्रैफिक से बचा सकता है। अगर आप सड़क पर चलाना चाहते हैं तो, ज़रा सड़क को छू दीजिए-वाहन अपने पंखों को ३० सेकंड में मोड़ लेगा और स्वयं को कार में तब्दील कर लेगा।

''उड़ने वाली कार'' गैसोलिन ईंधन पर ७२५ कि.मी तक हवा में ११५ कि.मी प्रति घंटा की रफ्तार से भी ज़्यादा तेज़ उड़ सकती है। इसमें सामने के पहिए सड़क पर चलाने के लिए और प्रोपेलर उड़ने के लिए हैं।

विश्व कीर्तिमान कप केक

मिनेआपोलिस, यू एस का ६८.४ किलो का कप केक अब तक का संसार का सबसे बड़ा प्रमाणित केक है। यह कप केक अमरीका के एक शॉपिंग मॉल स्पॉन्ज बॉब क़्स्वायर पैन्ट्स की दसवीं वर्षगाँठ समारोह के उपलक्ष्य में बनाया गया था। मिनेसोटन पेस्ट्री के शेफ जोडी ली नोप्स ने cakes.com की इस केक को पकाने में मदद की थी।

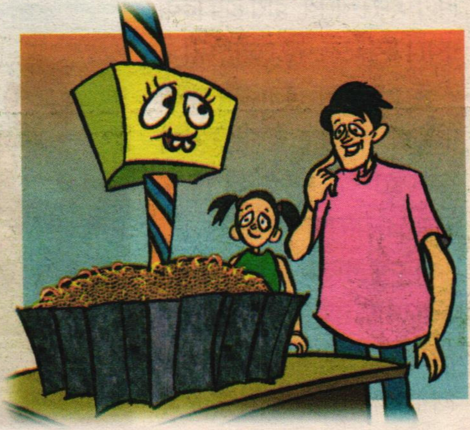

यह १२ घंटे की लंबी प्रक्रिया से पकाया गया; केक ३०.४८ से.मी की ऊँचाई व ६०.९६ से.मी चौड़ाई में फैला हुआ था और निक्लोडियन नेटवर्क के कार्टून चरित्र स्पोन्ज बॉब क़्स्वायर पैन्ट्स की शक्ल में सजाया गया था।

समारोह आयोजकों के अनुसार इसे १,५०० लोगों को परोसा जाना था!

फ़ोन जो आप पहन सकते हैं? और जानें hindi.chandamama.com पर

पत्तियों का एल्बम

यह सब तब शुरू हुआ जबकि हमारी वनस्पति विज्ञान की शिक्षिका ने हमें पत्तियों का एक एल्बम प्रस्तुत करने को कहा। ''याद रखना, मैं नहीं चाहती कि हर कोई एक जैसी नीम की पत्तियाँ और अशोक की पत्तियाँ चिपका दे। नायाब पत्तियाँ छाँटो! बेहतरीन पत्ती एल्बम को २० अंक मिलेंगे और उस दल के लिए इस पाठ पर परीक्षा देना भी आवश्यक नहीं।'' उसने अपनी आँखें चमकाईं और हमारे दिल धड़कने लगे।

इस प्रकार शहर की सबसे अच्छी पत्तियों के लिए एक ज़बरदस्त होड़ शुरू हो गई। एक परीक्षा से छुट्टी, केवल एक बड़ी राहत ही नहीं थी, बल्कि एक शेखी बघारे जानेवाली बड़ी चीज़ भी थी। आकाश ने बड़े गर्व से हमें सजावटी पत्तियाँ दिखाईं जो उसने अपने पिता से उसके लिए ऊटी से लाने को कहा था। हम सब ने उसकी भूगोल की पाठ्यपुस्तक में सँभाल कर दबाई हुई पत्तियों को देखने के लिए चारों तरफ भीड़ लगा ली। आकाश ने चुनौती देते हुए कहा, ''मैं शर्त लगा सकता हूँ कि इसके जितनी अच्छी पत्तियाँ कोई भी नहीं पा सकता!'' इस तरह की चुनौतियों के लिए हम बहुत ही संवेदनशील हैं और तुरंत ही सुशांत, मृदुल व मैंने संसार की सबसे अच्छी पत्तियाँ संकलित करने का निश्चय किया।

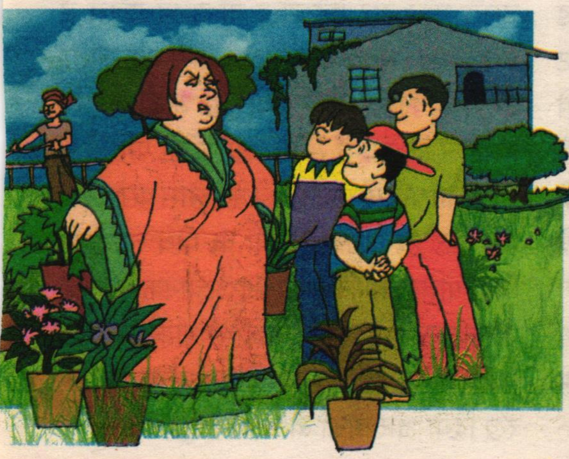

विद्यालय के बाद, हम अपनी साइकिलों से वोल्टास कॉलोनी की ओर थके हुए से चल दिए। ''जूपिटर हाउस'' उन शानदार बगलों में से एक था जिनकी दीवारों पर बोगनवेलिया खिले रहते थे। हमने जान लिये कि यहीं हमें विचित्र क्रोटोन मिलेंगे। उभरी हुई आँखों और हमेशा त्यौरी चढ़ाए रहनेवाली एक महिला माली को गुलाब की क्यारियों की निराई करने की आज्ञा दे रही थी।

हमने दरवाज़ा खोला और अंदर गए। उसने हमें घूरा। मृदुल दुब्बूपने से हकलाया, ''हम यहाँ के पौधों से कुछ पत्तियाँ ले सकते हैं?'' उसके हाथ ने सबसे खूबसूरत पौधों के संग्रह की तरफ इशारा किया। ''वे पौधे?'' उसने अपने चेहरे की एक भौंह उठाकर गुस्से से हमसे पूछा। मृदुल ने जल्दबाज़ी में अपना हाथ पूरा २० डिग्री खिसकाया और थोड़ी दूरी पर कुछ

तेनाली राम की कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

भूरे हो रहे पौधों की तरफ इशारा किया।

"नहीं, नहीं...मेरा मतलब निश्चय ही उन पौधों से है!" उसने पूरी तरह खिसियाते हुए कहा। उसने कुछ एक पल के लिए इस पर विचार किया और धीरे से अपना सर हिलाया। "ध्यान रहे, अगर वहाँ के किसी भी पौधे की पत्ती को हाथ भी लगाया तो..." धमकी हवा में ही छोड़ दी गई। नीले फूलों वाले बैंगनी पौधे फ्लेमबॉएंट की तरफ इशारा करते हुए उसका चेहरा गर्व से भर उठा। "वह एक परिष्कृत वर्ण संकर थॉलस है। विशेष रूप से मँगवाया हुआ। आह! और वो वहाँ पर बहुत ही खास प्लूमेट्टा है। तुम्हें उसकी तरह का दूसरा पौधा नहीं मिलेगा!" उसने कहा। "तुम किस विद्यालय से हो?" उसने पूछा। सुशांत ने बड़े गर्व से उत्तर दिया, "सेंट मार्गरेट मैट्रिकुलेशन स्कूल!"

मेरी आँखें दुर्लभ पौधों की खूबसूरत पत्तियों पर टिकी थीं। माली हमारे ऊपर बाज़ की तरह नज़र रख रहा था। जब सुशांत सावधानी से कुछ पत्तियों से काले धब्बे निकालने लगा मैंने मृदुल को कोहनी मारी और उससे बात की। हम नहीं चाहते थे कि सुशांत सुने...वह थोड़ा वफादार प्रकार का लड़का है।

"इस पौधे को क्या हुआ?" मृदुल ने मुड़ी हुई पत्तियों वाले कुछ पौधों की तरफ इशारा करके कहा, "ये तुम्हारी समझदारी है कि तुम्हारा ध्यान इस पर गया! यह बॉल वर्म है जो इस मौसम में पौधों पर आक्रमण करता है। क्या तुम बॉल वर्म्स के बारे में जानते हो? मैं तुम्हें बता दूँगा...!" माली शुरू हो गया। इसमें कोई शक नहीं था कि उसे बॉल वर्म्सकि बारे में बात करना किसी भी और चीज़ से कहीं अधिक प्यारा था!

जब मैंने उन दोनों को देखा मेरा हँसने का मन हुआ-सुशांत अपने चश्मे ठीक कर रहा था और हर एक शब्द को बड़ी उत्सुकता से सुन रहा था (अगर उसके पास नोट पैड होता तो उसने नोट्स ले लिए होते)। मृदुल वाकई मुश्किल से एक जंभाई दबाने की कोशिश कर रहा था। मैंने जल्दी से दुर्लभ पौधों से जितनी ले सकता था उतनी पत्तियाँ ले लीं। जिन पत्तियों में छेद थे वे मेरी खास पसंद थीं। मैंने कुछ ही पत्तियाँ ली थीं पर पौधे तकरीबन बिना पत्तियों के दिख रहे थे। अचानक मैंने एक आवाज़ सुनी और मैंने जल्दी से बाहर आने की कोशिश की, लेकिन एक बड़े गमले पर मैंने पैर रख दिया और पौधा दो भागों में टूट गया।

दुष्टु दत्तू की कहानियाँ कॉमिक के रूप मे hindi.chandamama.com पर

घबराया हुआ, मैं उसे देखते समय दूसरे बड़े गमले पर बैठ गया (बहुत बड़ी गलती! वह परिष्कृत थॉलस का गमला था!) मैं जल्दी से उठा, अच्छी तरह कुचले हुए पौधे देखा। मैं तुरंत ही वहाँ से उड़न छू हो लिया लेकिन कुछ और गमलों से ठोकर खाए बिना नहीं।

जब मैंने सुशांत और मृदुल को टूटे गमलों के बारे में बताया, वे डर गए, सुशांत के माथे पर पसीने को बूँदे छलक आईं। उसने मेरे हाथ की पत्तियों को प्रश्नवाचक मुद्रा में देखा। "ओह! जब मैंने जाकर उस से गिड़गिड़ा कर माँगा तो उसने मुझे लेने के लिए कह दिया।" मैंने प्यार से झूठ बोल दिया।

हमने अपनी पत्ती एल्बम तैयार की और पौधों के बारे में भूलने की कोशिश की। उस शाम मैं जैसे ही जूपिटर हाऊस के पास से नीचे झुक कर व रेंगकर गुज़रा, मैंने महिला को अपनी पड़ोसन से चिल्लाते हुए सुना, "तीन लड़के! एक पत्ती चुराने वाला गिरोह! उन्होंने मेरा कीमती बगीचा नष्ट कर दिया अगर वे मेरी पकड़ में आ गए तो..."

अगले दिन, हम सब ने अपनी एल्बम प्रस्तुत कर दीं। जब उन्होंने प्रशंसा से सर हिलाया तो हमने अपनी वनस्पति विज्ञान शिक्षिका की ओर देखा, "हूँ....अत्यंत रोचक पत्तियाँ। ये तुमने कहाँ से लीं?" इससे पहले कि हम उसे रोक पाते, सुशांत ने उत्साह से घोषित किया, "मैम हमने ये सब पत्तियाँ वोल्टास कॉलोनी के "जूपिटर हाउस" से ली हैं..., घर की महिला ने अमर को पत्तियाँ तोड़ लेने की आज्ञा दी थी..."

वनस्पति विज्ञान की शिक्षिका के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई। उसकी त्यौरियाँ एक नाराज़ सूरज की तरह ऊपर उठ गईं। हमें यह समझने में देर नहीं लगी कि वास्तव में, जिम्मेदार पड़ोसी वही थीं। हम उसी शाम जूपिटर हाऊस में लाए गए और उस भयानक महिला ने मुझे वह हर एक पौधा (गमलों के साथ) दुबारा लगाने को कहा जिन्हें मैंने नुकसान पहुँचाया था।

इसलिए मैं शहर की हर एक पौधशाला में प्लूमेट्टा, ऐक्सट्राऑर्डनरिआ, लैवेंडर ऐक्सॉटिक और अन्य पौधों के एक संचित भंडार को देखने जाता हूँ। लड़के! क्या महिला सही थी जब उसने कहा कि ये पौधे दुर्लभ हैं! यद्यपि, मेरे प्रयासों ने मुझे समझदारी दी! मेरे पिता हमेशा कहते हैं कि धन पेड़ पर नहीं उगता। और न पत्तियाँ ही जैसा कि मैंने अपने जीवन काल में अनुभव किया है।

- रमा रमेश

बालक भीम, आर्य और अन्य कॉमिक hindi.chandamama.com पर

हँसते-हँसते हो जा लोटपोट

एक भोजनालय में, एक ग्राहक वेटर को परेशान कर रहा था। पहले उसने वातानुकूलन यंत्र (ए सी) को अपनी तरफ़ मोड़ने के लिए कहा क्योंकि बहुत गर्मी लग रही थी। फिर उसने इसे नीचे करने के लिए कहा क्योंकि उसे बहुत ठंड लगी थी। यह सब तकरीबन आधे घंटे तक चला। आश्चर्यजनक रूप से, वेटर बहुत ही धैर्य से बिना नाराज़ हुए प्रतिक्रिया कर रहा था। एक दूसरा ग्राहक जो दूसरी मेज़ पर बैठा था, बहुत देर से यह देख रहा था। उसने वेटर को बुलाया और पूछा, ''तुम परेशान कैसे नहीं हो रहे?''

''ओह, मुझे सच में परवाह या परेशानी नहीं है।'' वेटर ने एक मुस्कुराहट के साथ कहा। ''हमारे पास एक भी वातानुकूलन यंत्र नहीं है।''

शिक्षकः अगर १+१=२ और २+२= ४ तो ४+४ क्या हुआ?

राम : यह बिल्कुल ठीक नहीं है! आपने आसान प्रश्नों के जवाब दिए और हमें कठिन के साथ छोड़ दिया।

श्रुतिः मंजू को गणित की परीक्षा में आज केवल एक अंक मिला इसलिए उसने एक को पाँच में बदल दिया और अध्यापक ने पकड़ लिया।

दादाजीः मैं आशा करता हूँ कि तुम इस तरह का काम नहीं करोगी।

श्रुतिः बिल्कुल नहीं दादाजी। मैं एक को सात में बदलूँगी।

दत्तू

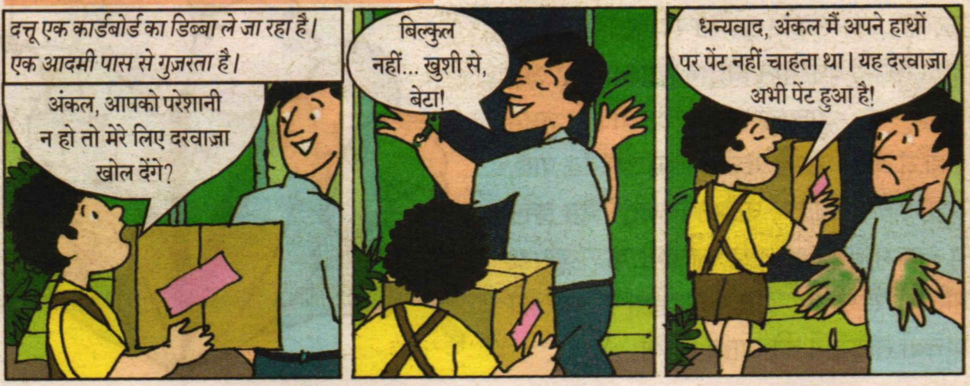

बीरबल की कहानियों का आनन्द लें hindi.chandamama.com पर

चार
निर्भीक
खोई हुई पायल
चित्र:गाँधी अय्या
कहानी:पद्म मोहनकुमार
उमा आज परेशान दिखाई दे रही है।
मध्यावकाश हुआ है जैसमीन, मिथुन, अनीता और दीपक साथ-साथ बैठे हुए हैं।
हम उससे पूछेंगे कि क्या गड़बड़ है?
क्या हुआ उमा?
कल मेरी सोने की पायल खो गई। हम सब जगह ढूँढ़ चुके हैं।
क्या तुम कल कहीं बाहर गई थीं?
हाँ, मैं बाज़ार गई थी लेकिन मैंने उसे रास्ते में नहीं खोया।
क्या तुमने अपने कमरे में ठीक से ढूँढ़ा?
हमने ध्यान से ढूँढ़ा। वह वहाँ नहीं है।
हम तुम्हारे घर पर आएँगे और ढूँढ़ने में तुम्हारी सहायता करेंगे।
बहुत-बहुत धन्यवाद!

शाम को चारों का दल उमा के घर आता है। वे सब जगह खोजते हैं।
उमा शायद वह चोरी हो गई है।
क्या?
हाँ हमारे घर का काम करनेवाली चम्पी और माली रामू...
क्या तुम्हारे घर में कुछ नौकर काम करते हैं?
उमा की माँ बच्चों को बात करते सुनती हैं।
हाँ, वह परिवार की तरह है।
मुझे विश्वास है चम्पी ऐसा कुछ नहीं करेगी।
लेकिन अगर वह चुराई नहीं गई होती तो अभी तक हमें मिल गई होती।
हमें सभी संभावनाओं पर विचार करना चाहिए।

उमा की माँ कमरे से जाती हैं।
मान लो चम्पी ने उसे चुराया तो वह जल्दी से बेचने की कोशिश करेगी, ठीक?
चोर जो कोई भी हो वह इसे इस शहर में नहीं बेच पाएगा।
क्यों?
वह पायल शांताराम ज्वेलरी के यहाँ बनी है वह बनावट को आसानी से पहचान लेगा...
...और संदेह हो जाएगा। मुझे विश्वास है चोर यह खतरा मोल नहीं लेगा।
हूँ...!
मेरा एक विचार है हम शहर के पास की आभूषण की दुकानों में चलते हैं।
अच्छा विचार है!
हम उनसे पूछेंगे कि किसी ने हाल ही में पायल बेचने की कोशिश तो नहीं की।

धन्यवाद!
हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेंगे।
वे घर पर जानकारी हासिल करते हैं।
ये अचानक रुचि क्यों?
वालाजा नगर में दो हैं।
एक दुकान दूध के बूथ के पास है।
माँ, कोई आभूषण की दुकान शहर में है?
वे अंतिम बची हुई दुकान की ओर सवार हो चल पड़े।
अगले दिन चारों ने एक सभा की।
तो हमें तीन दुकानें देखनी हैं।
हम विद्यालय के बाद जाएँगे।
वे साइकिल पर सवार हो दूसरे शहर गए। पहली दो दुकानों पर जाना व्यर्थ साबित हुआ।
यह हमारी एक मात्र उम्मीद है। हमें उमा की सहायता करनी है।
अभी जारी है...

Avail the Coolest Combo Pack!!

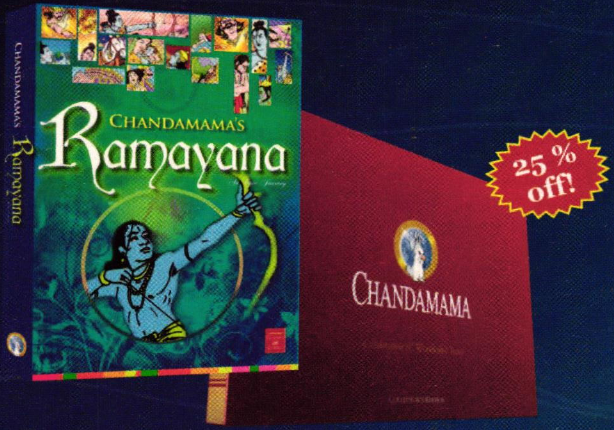

Buy Chandamama's Collector's Edition+Ramayana for Rs ~~898~~ 673* Only!

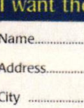

Chandamama's Ramayana is the first fully Illustrated Ramayana which comes in a single book.

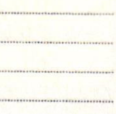

Chandamama Collector's Edition features the best of Chandamama published over the last 60 years.

I want the Coolest Combo Pack:

Name .... Subscriber No ....

Address ....

City .... State .... Pin ....

Telephone .... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD for Rupees (in words) ....

Cheque/DD no .... Favouring Chandamama India Ltd

on .... bank. (*Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques*)

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, No. 2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelangarai, Chennai – 600 041. Phone: (044) 43992828

Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

Both these titles are available only in English at all leading bookshops.

To place an order go to www.chandamama.com

*For purchase outside India, the Coolest Combo Pack is available at $~~100~~ $80

CHANDAMAMA (Hindi) September 2009 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11